फरवरी 2003
Rs. 10/-
चन्दामामा

चिंटू की पसन्द
मैसूर चन्दन बेबी साबुन चन्दन के तेल और बादाम के तेल से भरपूर है। यह त्वचा के लिए अति उत्तम है।
स्मार्ट बच्चे सदा मैसूर चन्दन बेबी साबुन पसन्द करते हैं।
Baby
Mysore Sandal
Baby Soap
Baby
Almond oil moisturiser and antiseptic soap.
द हाउस ऑफ मैसूर सन्दल चन्दन की खुशबू सीधे आपके घरों में ८० से भी अधिक वर्षों से ला रहा है।

HERO
ACTIVE
YANKEE
Heroes start early.
Ride, race, take a tumble or even take a fall.
Because it's never too early to be a hero.
HERO CYCLES

उड़ीसा की परम्परा - ३
कला अद्वितीय -
उड़ीसा का पट्टचित्र
Touch Orissa to Feel India
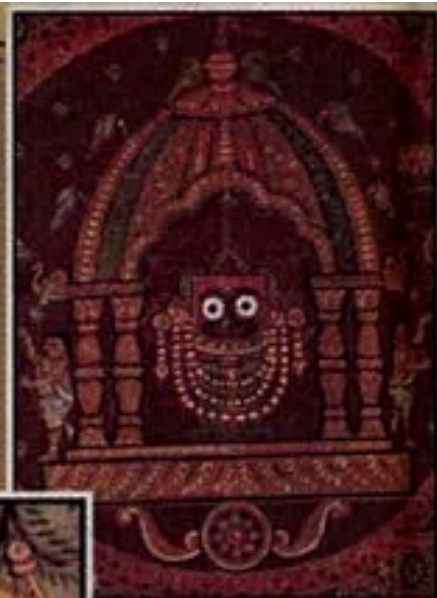
प्राचीन कलिंग अथवा उत्कल, जिसे आज उड़ीसा कहते हैं, के परम आराध्य देवता श्री जगन्नाथ हैं। वे अनेक दृष्टियों से अद्वितीय हैं। वे यहाँ अपने बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ हैं। यदि यह संयोग असामान्य है, तो इन देवों के लिए किये गये अनुष्ठान भी उतने ही असामान्य हैं।

कुछ अनुष्ठानों से ऐसा आभास होता है मानों श्री जगन्नाथ बहुत अर्थों में मानव हैं। मनुष्यों के समान वे बुखार से भी पीड़ित होते हैं। आषाढ़ (जून के अधिकांश दिन) के कृष्ण पक्ष में इन देवों को मनुष्यों की दृष्टि से बचाकर रखा जाता है। उन्हें पूरी तरह स्नान कराया जाता है, जिससे उन्हें जुकाम हो जाता है। वास्तविकता यह है कि क्योंकि स्नान के कारण काष्ठ की मूर्तियों पर के रंग फीके पड़ गये हैं, वंशागत कलाकार परदे के पीछे उन्हें फिर से रंग करने में व्यस्त थे।

अतीत में कभी इन देवताओं के आकारों से निकट से परिचित इन कलाकारों ने कैनवस पर चित्र बनाया। क्रमशः उन्होंने कुछ अन्य पौराणिक विषयों पर कैनवस पर जिसे पट्ट कहते हैं, चित्र बनाये। सूती कपड़े पर खड़िया, इमली सीड, स्टार्च तथा सरेस मिलाकर लगा देते हैं। यह इससे कड़ा हो जाता है, यद्यपि इसकी नमनशीलता बनी रहती है। इन पर बने चित्र बहुत आकर्षक लगते हैं और दीर्घायु होते हैं। इन्हें पट्टचित्र कहते हैं। कला की इस विशिष्ट शैली में लगे हुए लोग मंदिरों के शहर पुरी के निकटवर्ती गाँवों में रहते हैं। ये गाँव हैं - रघुराजपुर और डंडासाही। इन गाँवों की अधिकांश गतिविधियों का केंद्र यही कला है जिसमें लगभग सभी परिवार लगे हुए हैं। पट्टचित्र की प्रशंसा विश्वभर के सभी कला-प्रेमियों द्वारा की जाती है।

## प्रश्न

१. उड़ीसा के किस नगर में श्री जगन्नाथ का मंदिर स्थित है?

..........................................................

२. इसके आराध्य देव से जुड़ा हुआ कौन सा लोकप्रिय पर्व है?

..........................................................

३. उस राजा का नाम बताओ जिसने इस भव्य मंदिर का निर्माण करवाया।

..........................................................

केवल १४ वर्ष की आयु के बच्चे इसमें भाग ले सकते हैं। रिक्त स्थानों में अपने उत्तर स्पष्ट अक्षरों में लिखो। नीचे दिये गये कूपन को भरो और अपनी प्रविष्टि २८ फरवरी २००३ से पहले इस पते पर भेज दो :

**Orissa Tourism Quiz Contest - 3**
**Chandamama India Limited,**
**No.82, Defence Officers' Colony,**
**Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.**

**नाम :** .................................................. **आयु :** ..................

**पता :** .................................................. **पिन :** ..................

*One winner picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for 3 days, 2-night stay at any of the OTDC Panthanivas, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism employees and their family members. The judges' decision will be final.*
***Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar-751 014. Ph:(0674)2432177, Fax:(0674) 2430887, e-mail:ortour@sancharnet.in. Website:Orissa-tourism.com***

# विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०७ फरवरी - २००३ सञ्चिका - २

जगन्नाथ का आदर
१९

दादी की कहानी
२९

माया सरोवर-१३
१३

सहज गुण
३४

## अन्तरङ्गम्




**SUBSCRIPTION**

**For USA and Canada**
**Single copy $2**
**Annual subscription $20**
***Remittances in favour of***
***Chandmama India Ltd.***
**to**
**Subscription Division**
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

**शुल्क**

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रक़म डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

*इस पत्रिका में विज्ञापन*
*देने हेतु कृपया सम्पर्क करें :*
**चेन्नई**
फोन : 044 - 231 3637
234 7399
**e-mail : advertisements**
**@chandamama.org**
**दिल्ली**
*मोना भाटिया*
फोन : 011-651 5111
656 5513/656 5516
**मुम्बई**
*शकील मुल्ला*
मोबाइल : 98203-02880
फोन : 022-266 1599
266 1946/265 3057

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

# जन-मन का संगम बनें ये नदियाँ

एक विशाल देश होने के कारण भारत को सैकड़ों नदियों के लाभ का वरदान उपलब्ध है, जो पेय जल के साथ-साथ घरेलू और कृषि कार्यों के लिए जल की हमारी माँग को पूरी कर रही हैं। इन नदियों में दोनों वर्षा ऋतुओं में प्रचुर मात्रा में जल भर जाता है। दुर्भाग्यवश, बिना इस बात को समझे हुए कि हम वर्षा जैसे वरदानों को कितनी क्षति पहुँचा रहे हैं, हम प्रकृति का विध्वंस करते जा रहे हैं। नदियाँ बहुत जल्द सूख जाती हैं और जल स्तर अतल गहराई में पहुँच जाता है। स्वभावतः हम लोगों को स्वयं कष्ट झेलना पड़ता है और हमें अपने पड़ोसियों के साथ, जो हमें जल दे सकते हैं, झगड़ा-फसाद करना पड़ता है।

सरकार अनेक वर्षों से इस समस्या का सामना कर रही है और इसके समाधान का प्रयास कर रही है जिससे तटवर्ती राज्यों में मैत्री भावना लाई जा सके। एक सम्भव समाधान बहुत पहले यह सोचा गया था कि नदियों को जोड़ दिया जाये जिससे प्रवाह निरंतर होता रहे और सारा उपलब्ध जल बराबर-बराबर बाँट लिया जाये। हाल में सरकार ने ३० बड़ी नदियों को अगले १० या १५ वर्षों में मिलाने का निश्चय किया है।

भारत का जन गण भिन्न-भिन्न मतों का अनुयायी है, भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलता है और उसकी भिन्न-भिन्न संस्कृति है। इसके बावजूद, इस विविधता में हमने एकता उपलब्ध की है। देश के कोने-कोने में देशभक्ति की भावना भरी हुई है जो हम सबको अपनी मातृ भूमि से जोड़ती है। यदि नदियों के संगम से एक नई समग्रता लाई जा सके तो हम सब को इसका स्वागत करना चाहिए।

सम्पादक : *विश्वम*
Visit us at : http://www.chandamama.org

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

# भारत के नायक - १७

हमारे देश में खेल के मैदान के शूरवीरों की कमी नहीं है। उनमें से कुछेक की चर्चा यहाँ की गई है। क्या उन्हें जानते हो?

**तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।**

1. मैंने २००२ में बूसन के एशियाई खेलों में पुरुषों के एकल गोल्फ में स्वर्ण पदक जीता। क्या मेरा नाम जानते हो?

---

2. मैं एक शीर्ष निशानेबाज और अर्जुन पुरस्कार विजेता हूँ। मैंने २००२ के कॉमनवेल्थ के खेलों में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। मैं कौन हूँ?

---

3. हाल में मैं शताब्दी का विस्डेन भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी चुना गया। क्या मुझे जानते हो?

---

4. मैं पद्मश्री हूँ। मैं चेन्नई में एक टेनिस कोचिंग अकादमी चलाता हूँ। कमेण्टरी देने के अतिरिक्त मैं टी.वी. धारावाहिकों और फिल्मों में काम करता हूँ। मेरा नाम क्या है?

---

5. फार्मूला ३ कार रैली चैम्पियनशिप में भाग लेनेवाला मैं पहला भारतीय हूँ। मैं विश्व भर में द्रुततमगामी भारतीय माना गया हूँ। क्या जानते हो मेरा नाम?

---

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय राष्ट्रीय नायक ........................ है, क्योंकि

........................................................

प्रतियोगी का नाम: ........................

उम्र: .............. कक्षा: ........................

पूरा पता: ........................

........................................................

पिन: .................. फोन: ..................

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ........................

अभिभावक के हस्ताक्षर: ........................

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ मार्च २००३ से पूर्व भेज दें।

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१७
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईकाडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

*Send your payment by DD or MO to:* **Popular Prakashan Pvt. Ltd.,**
**35-C M.M Malaviya Marg, Popular Press Building, Tardeo, Mumbai 400034.**
**For enquiries contact sales@popularprakashan.com Visit our site at www.popularprakashan.com**

# भीतरकनिका

यदि तुम अपनी छुट्टियाँ भीड़भाड़ और शोरगुल से दूर एक अलग-थलग दुनिया में बिताना चाहते हो तो उड़ीसा अंतर्गत भीतरकनिका के लिए रवाना हो जाओ।

एक प्राकृतिक आश्रय, भीतरकनिका ६०० वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है और भारत की कच्छ वनस्पति की दूसरी सबसे बड़ी सघन पर्यावरण प्रणाली है। कच्छ वनस्पति की ६० से अधिक किस्में यहाँ पाई जाती हैं।

भीतरकनिका एक खग अभयारण्य और राष्ट्रीय पार्क भी है। यह अनेक दुर्लभ तथा संकटापन्न प्रजातियों का आवास है। पक्षियों की लगभग १७० आवासी और प्रवासी प्रजातियाँ यहाँ देखी जा सकती हैं। भीतरकनिका के तीन ओर नदियाँ प्रवाहित होती हैं और एक ओर समुद्र लहराता है। इसमें आड़े-तिरछे अनेक संकरी खाड़ियाँ और नहरें हैं जो अन्ततः बंगाल की खाड़ी में मिल जाती हैं जिससे एक मुहानेदार डेल्टा बन जाता है। इन विसर्पी संकरी खाड़ियों से डेल्टा के अंदर अनेक द्वीप बन जाते हैं।

भीतरकनिका बंगाल की खाड़ी का क्रीड़ांगण है। जब भी इसमें ज्वार प्रवेश करता है, सारा कच्छ वनस्पति बन प्रवाहित होने लगता है। जल की वापसी के पश्चात संकरी खाड़ियों के तटों पर केकड़ों, मछलियों, रेंगनेवाले तथा अन्य समुद्री जीवों के साथ बहुपरतीय पंक देखा जा सकता है। यह आश्चर्यजनक दृश्य होता है।

इसका दूसरा आकर्षण है - ओलिव रिडले कछुआ। साल में दो बार ऐसे लाखों कच्छप अण्डा देने यहाँ आते हैं। भीतरकनिका केवल जलमार्ग से जा सकते हैं और यहाँ प्रवेश करने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है। किराये पर मोटर बोट उपलब्ध हो सकते हैं।

## वहाँ कैसे पहुँचे

भीतरकनिका में चाँदवाली से (भुवनेश्वर से १९० कि.मीटर) या राजनगर से (केन्द्रापारा से ३० कि.मी.) या गुप्ती से (राजनगर से २५ कि.मी.) प्रवेश किया जा सकता है।

# इंगित ज्ञान

बाबुल ने एक नया घर बनवाया। इसमें चार कमरे थे। तीन कमरे उसने अपने परिवार के सदस्यों के रहने के लिए रख लिये और एक कमरा राघव नामक एक युवक को किराये पर दे दिया।

राघव बहुत ही ग़रीब था। वह एक दुकान में काम करता था और बड़ी मुश्किल से दिन काट रहा था। पहनने के लिए उसके पास अच्छे कपड़े भी नहीं थे। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में वह रसोई नहीं बनाता। बाबुल को उसकी इस दुस्थिति पर दया आती थी और उसकी सहायता करना चाहता था। पर उसका मामा ऐसा होने नहीं देता।

''उस पर दया करके उसकी सहायता करने लगोगे तो उसे इसकी आदत पड़ जायेगी और सदा तुम्हीं पर निर्भर रहेगा। मेहनत करके कमाने की उसकी इच्छा नहीं होगी। वह युवक है। इस उम्र में उसे कमाना चाहिए और स्वतंत्र जीवन बिताने की कोशिश करनी चाहिए। उसकी सहायता करने की इच्छा दिमाग़ से निकाल दो।'' उसके मामा ने उसे सावधान करते हुए कहा।

बाबुल अपने मामा की बहुत इज्ज़त करता था। बचपन में ही उसके माँ-बाप गुज़र चुके थे। मामा ने ही उसे पाला-पोसा और बड़ा किया। आज वह अगर इतनी अच्छी हालत में था तो इसका कारण उसका मामा ही था। वह उसे अपना गुरु भी मानता था। उसकी बातों को कभी भी नहीं टालता। इसलिए वह चुप रह गया।

एक दिन बाबुल का मामा दूर के रिश्तेदार की शादी पर पड़ोस के गाँव में गया। उस दिन शामको जब बाबुल बाज़ार से लौटा तो वह राघव की कराह सुनकर उसके कमरे में गया।

राघव चट्टाई पर लेटा हुआ था और चादर ओढ़े हुए था। बीच-बीच में दर्द के मारे ''माँ, माँ!'' कहता हुआ कराह रहा था। बाबुल ने उससे इसका कारण पूछा।

''तबीयत ठीक नहीं है। लगता है, बुखार भी है।'' राघव ने कराहते हुए कहा।

- कमलनाथ -

"यह तो ठीक नहीं हुआ। वैद्य से दवा ले आते तो अच्छा होता।" बाबुल ने पूछा।

"वैद्य के पास कैसे जाऊँ? पैसे के बिना तो वे नब्ज भी नहीं देखते। कल तक बुखार अपने आप उतर जायेगा।" राघव ने कहा।

बाबुल जेब से कुछ रुपये निकालकर उसे देने ही वाला था कि मामा की बात याद आ गयी और उसने रुपये जेब में वापस रख लिये।

इस प्रकार तीन दिन गुज़र गये। चौथे दिन उस दुकान का मालिक राजनाथ उसे देखने आया, जहाँ राघव काम करता था। उसने राघव से मिलने के पहले बाबुल से उसके बारे में जान लिया था।

राजनाथ राघव के कमरे में गया और उसके माथे पर हाथ रखकर देखने के बाद बाबुल से कहा, "यह क्या कर दिया आपने? इसका बदन तो जल रहा है और आपने इसे वैद्य के पास ले जाने की नहीं सोची। क्या यह तुम्हें ठीक लगता है?"

बाबुल का चेहरा फीका पड़ गया। उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ। तब उसने राजनाथ को अपने मामा की सारी बातें सुनायीं।

राजनाथ ने उसे ग़ौर से देखते हुए कहा, "बड़े अजीब आदमी निकले। मामा की बात ही क्या तुम्हारे लिए सब कुछ है? मानता हूँ, उनकी बातों में सचाई है, पर जब एक आदमी सख़्त बीमार हो तो उसकी मदद करना तुम्हारा फ़र्ज़ नहीं?" फिर राजनाथ राघव को वैद्य के पास ले गया।

तभी शादी पर गया बाबुल का मामा लौट रहा था। उसने सड़क पर जाते हुए राजनाथ और राघव को देखा। घर आने के बाद उसने बाबुल से सबकुछ जानने के बाद उससे कहा, "राजनाथ की कही बातें सच्ची व वास्तविक हैं। किसी निर्णय पर टिके रहना ग़लती नहीं कहलाती। परंतु ज़रूरत पड़ने पर, स्थिति को दृष्टि में रखते हुए उस निर्णय को बदलना भी उतना ही ज़रूरी है। तुमने जो काम किया, वह अवश्य ही ग़लत है। तुम्हें खुद सोचने की आदत डालनी चाहिए। तभी कोई कुछ बन पाता है। स्थिति को खुद समझो, जानो और आवश्यक कार्रवाई करो। इंगित ज्ञान नितांत आवश्यक है।"

मामा की बातों से उसे मालूम हो गया कि भविष्य में उसे क्या करना चाहिए।

# माया सरोवर

## 13

*(नदी तट की पहाड़ी गुफ़ाओं के सामने के मैदान में जयशील और सिद्धसाधक को मकरकेतु दिखायी पड़ा। उन्होंने देखा कि उसके साथ जयशील का बाल्य मित्र देवशर्मा और सेनाधिपति का बेटा मंगलवर्मा भी है। सिद्धसाधक ने नरवानर को जलग्रह से बचाया। उसने हाथ जोड़कर सिद्धसाधक को प्रणाम किया और उसके पैरों पर गिर पड़ा।) - इसके बाद*

जब मकरकेतु तथा औरों ने भी देखा कि नरवानर, सिद्धसाधक का पालतू जानवर हो गया है तो वे चकित रह गये। जयशील ने खुश होते हुए कहा, ''इतने लंबे अर्से के बाद सिद्धसाधक ने अपने लिए एक सवारी पा ही ली। पर, वह खतरनाक सवारी है। कृपाणजित्त को मानों उसने मार ही डाला। सर्परस्वर को उठाकर ले गया। पता नहीं, वह कैसे इसके चंगुल से बच पाया।''

मैंने ही सर्परस्वर को नरवानर से बचाया। उसी के द्वारा मुझे मालूम हुआ कि तुम यहीं कहीं हो।'' मकरकेतु ने कहा।

जयशील ने मकरकेतु को नख से शिख तक एक बार ग़ौर से देखा और कहा, ''तुम्हारे घावों का क्या हुआ? तुम इतनी जल्दी स्वस्थ हो गये, यह बड़े आश्चर्य की बात है।''

मकरकेतु ने देवशर्मा को दिखाते हुए कहा, ''पर्वतों के बीच मैं अचेत पड़ा हुआ था। मेरे ज़िन्दा होने की उम्मीद भी नहीं थी। पर इन्होंने

मेरी चिकित्सा करके मुझे बचा लिया। सब वैद्य को भगवान कहते हैं, इसलिए मैं भी इन्हें वैद्य देव के नाम से बुलाता हूँ। इस बीच इनको लेकर एक बार मैं माया सरोवर भी गया और तुम्हें ढूँढ़ते हुए यहाँ आ गया।''

देवशर्मा अमरावती नगर में जयशील का बाल्य मित्र था। साथ ही वह जुआरी भी था। दोनों की मुलाक़ात लंबे अर्से के बाद उस द्यूत गृह में हुई। जयशील की समझ में नहीं आया कि उसने वैद्य विद्या कब सीखी और कहाँ से। उसने देवशर्मा को प्रणाम करते हुए पूछा, ''वैद्यदेवजी, यह मंगलवर्मा क्या आपका अनुचर है?''

इसपर देवशर्मा ने हँसते हुए कहा, ''मंगलवर्मा मेरा शिष्य है। मुझसे यह विद्या सीख रहा है। माया सरोवर जाने की उसकी तीव्र इच्छा थी। वर्मा, मैंने ठीक ही कहा न?''

मंगलवर्मा ने कराहते हुए लंबी साँस खींची और क्षण भर के लिए काठ के अपने पैर को देखते हुए कुछ कहने ही वाला था कि इतने में आकाश से पंखों के फड़फड़ाने की ऊँची आवाज़ सुनायी पड़ी। सबने सिर उठाकर उस तरफ़ देखा।

उन्होंने देखा कि हंसों की एक टोली एक रथ को खींचते हुए आकाश-मार्ग में जा रही है। उस दृश्य को देखते ही मकरकेतु, सर्पनख और सर्पस्वर हाथ जोड़कर चिल्लाने लगे, ''जय माया सरोवरेश्वर की!''

उनकी यह चिल्लाहट रथ में बैठे हुए लोगों ने सुनी। दूसरे ही क्षण रथ आकाश में एक पल के लिए रुक गया और तेज़ी से जयशील व अन्य लोगों की तरफ़ आने लगा। वह पास ही के नदी के पानी में उतरा।

जैसे ही रथ पानी में उतरा, नदी तट पर खड़े मकरकेतु, सर्पनख व सर्पस्वर चकित होते हुए एक दूसरे से पूछ रहे थे, ''अंगरक्षक अकेले ही रथ पर क्यों आये?'' फिर तीनों पानी में कूद पड़े और रथ की ओर बढ़े।

अब नदी तट पर जयशील, सिद्धसाधक, वैद्यदेव के नाम से प्रचलित देवशर्मा व सेनाधिपति का बेटा मंगलवर्मा मात्र रह गये। जयशील ने देवशर्मा को आँख से इशारा किया और मंगलवर्मा से कहा, ''वर्मा, हम थोड़े ही शाश्वत शत्रु हैं; वैसे तो हम शाश्वत मित्र भी नहीं है। तुम्हें देखते हुए लगता है कि तुम माया सरोवर हो आये। मैंने जो अंदाज़ा लगाया, वह

सच ही है न? वहाँ तुमने क्या कनकाक्ष राजा की संतान कांचनमाला और कांचनवर्मा को देखा? वे कैसे हैं?

मंगलवर्मा ने इसका उत्तर देने के पहले काठ के अपने पैर को एक बार देखा और देवशर्मा की ओर देखते हुए कहा, ''ऐसे प्रश्नों का उत्तर देना हो तो इसके लिए वैद्यदेव की अनुमति चाहिए।''

जयशील ने उसकी तारीफ़ करते हुए कहा, ''तुम्हारी गुरुभक्ति प्रशंसनीय है। तो ठीक है, यही प्रश्न मैं तुम्हारे गुरुदेव से पूछ रहा हूँ।''

इतने में ''जय महाकाली'' कहता हुआ सिद्धसाधक नरवानर वाहन पर से उतरा। ''जयशील, ये तो जल पक्षी हैं। इनसे बातें करते हुए समय व्यर्थ क्यों करते हो? उधर वह मगर मुखवाला, उसके अनुचर उन पक्षियोंके रथ में बैठकर भाग जाने की तैयारी में हैं।''

''साधक, अगर सचमुच ही वे भाग जाना चाहते हों तो भाग जाएँ। हम उन्हें रोक भी नहीं सकते। यहाँ तो उनके दो अनुचर हमारे साथ हैं।'' जयशील ने कहा।

सिद्धसाधक मंगलवर्मा और देवशर्मा को आँखें फाड़फाड़कर गुर्राता हुआ देखने लगा और कहने लगा, ''यह मंगलवर्मा तो जाना-पहचाना आदमी है। यह दूसरा आदमी जल मानव नहीं लगता। माया सरोवर जाने में जो हमारी सहायता कर सकते हैं, वे नदी में हैं। वे वहीं से भाग जायेंगे तो माया सरोवर में जाना हमारे लिए शायद ही मुमकिन हो।''

उसकी इन बातों से देवशर्मा ने नाराज़ होते हुए कहा, ''साधक, तुम सोचते कम हो और नाराज़ होते हो ज़्यादा। क्या तुम्हें मालूम है कि वह मकरकेतु जान-बूझकर इन पर्वत-प्रांतों में क्यों आया? तुम्हें और तुम्हारे मित्र को माया सरोवर ले जाने के लिए ही। वहाँ तुम दोनों को भयंकर जलवृक्ष राक्षसों से लड़ना होगा और उनसे अपने को बचाना होगा।''

''जल राक्षस ! महाकाल की सहायता से उन्हें इस शूल का शिकार बनाऊँगा और पानी से उठाकर किनारे फेंक दूँगा। अब रही जयशील की बात। उसके पास महाकाल के सेवक कालकाल का दिया हुआ खड्ग है।'' सिद्धसाधक ने कहा।

जयशील भाँप गया कि बात बढ़ जायेगी और साधक, देवशर्मा से झगड़ पड़ेगा, क्योंकि

उसे मालूम नहीं कि देवशर्मा उसका बाल्य मित्र है। उसने इसे टालने के लिए देवशर्मा से कहा, ''वैद्यदेवजी, क्या आप अपने शिष्य मंगलवर्मा को उस रथ के पास भेजकर जान सकते हैं कि उनके बीच क्या बातचीत हो रही है?''

देवशर्मा ताड़ गया कि जयशील की बातों का अंतरार्थ क्या है। उसने मंगलवर्मा से कहा, ''शिष्य मंगल, तुम उस रथ के पास जाओ और पता लगाओ कि उस हंस के रथ में माया सरोवरेश्वर क्यों नहीं हैं और उनकी जगह पर उनका अंगरक्षक क्यों आया हुआ है।''

मंगलवर्मा ने सिर झुकाकर देवशर्मा को प्रणाम किया और पानी में उतरकर रथ की ओर बढ़ता हुआ गया। उसके जाते ही जयशील ने देवशर्मा से पूछा, ''शर्मा, अब बताओ, माया सरोवरेश्वर के पास हिरण्यपुर के अपहृत राजकुमार और राजकुमारी वहाँ सकुशल तो हैं?''

''दोनों सकुशल हैं। उनके अपहरण पर हिरण्यपुर का राजा वहाँ दुखी है, तो यहाँ वह माया सरोवरेश्वर भी अपने किये काम पर दुखी है।'' देवशर्मा ने कहा।

उन दोनों के बीच हो रही इस बातचीत को सुनते हुए सिद्धसाधक ज़ोर से ''जय महाकाली'' कहता हुआ चिल्ला पड़ा और पूछा, ''जयशील, क्या तुम दोनों पहले से ही एक दूसरे को जानते हो? यह बात अब तक तुमने मुझसे क्यों छिपायी?''

जयशील ने उसे धीमी आवाज़ में बात करने की सलाह दी और कहा, ''साधक, थोड़ा शांत हो जाओ। देवशर्मा और मैं बाल्य मित्र हैं। उस नगर में हम जाने-माने जुआरी थे। वह तो लंबी कहानी है। पर मकरकेतु को मालूम होना नहीं चाहिए कि हम दोस्त हैं। अगर यह रहस्य खुल जाए तो हम उस माया सरोवरेश्वर को बंदी नहीं बना पायेंगे और साथ ही कांचनमाला, कांचनवर्मा को मुक्त नहीं कर पायेंगे।''

''तुमने ठीक कहा। अब बात मेरी समझ में आ गयी। सावधान रहूँगा। पर अब हंस के इस रथ से कैसे निपटें? यह तो हमारे लिए एक पहेली बन गयी। हमें यह ज्ञात नहीं कि इसके पीछे का व्यूह क्या है। शायद हम दोनों के दोस्त देवशर्मा यह रहस्य जानते होंगे,'' कहते हुए साधक ने देवशर्मा को बड़े प्यार से गले लगाया।

देवशर्मा ने मुस्कुराकर सिद्धसाधक के कंधे को थपथपाते हुए कहा, "माया सरोवर के जल वृक्ष राक्षस को तुम मार सकोगे तो तुम्हें महाकाल से सभी शक्तियाँ प्राप्त हो जायेंगी। वह जलवृक्ष, तुम्हारे आराध्य महाकाल का परमशत्रु है।"

"यह बात है ! उसे पकड़ लूँगा और इस नरवानर का आहार बनाऊँगा। नरवानर, कहो, उसे खा जाओगे न?" कहते हुए सिद्धसाधक ने नरवानर के कंधे को शूल से स्पर्श किया।

बस, नरवानर उछल पड़ा और नदी तट पर खड़े हाथी जलग्रह की ओर बढ़ा। साधक ने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "ठहरो नरवानर, ठहर जाओ। हम अब मकरकेतु और उसके यजमान माया सरोवरेश्वर के मित्र हैं। वह जल हाथी तुम्हारा बड़ा भाई जैसा है।"

देवशर्मा, साधक की बातों पर ठठाकर हँस पड़ा। फिर अपनी वज्रखचित छड़ी को उठाकर नदी दिखाते हुए कहा, "लगता है, माया सरोवर में किसी बात को लेकर खलबली मची है। अगर ऐसा नहीं हुआ होता तो सरोवरेश्वर का यह रथ इस नदी में नहीं उतरता।"

देवशर्मा इस विषय के बारे में कुछ और बताने ही जा रहा था कि इतने में मंगलवर्मा और मकरकेतु वहाँ आये। दोनों बहुत दुखी लग रहे थे। उनके चेहरों से स्पष्ट मालूम हो रहा था कि कोई अप्रिय घटना घटी है। मकरकेतु ने रुआँसे स्वर में कहा, "वैद्यदेव, एक घंटा पहले जब माया सरोवरेश्वर हंसों के रथ में बैठ जल विहार कर रहे थे, तब जलवृक्ष राक्षस पानी के अंदर से ऊपर आकर अकस्मात् रथ में उनके साथ बैठी राजकुमारी कांचनमाला को पकड़ना चाहते थे। रथ चालक और अंगरक्षक उस विपत्ति से बचने

के लिए रथ को आकाश में उड़ा ले आये, परंतु...'' इससे आगे वह कुछ कह नहीं सका और आँसू पोंछते हुए खड़ा का खड़ा रह गया।

देवशर्मा ने आतुरता भरे स्वर में पूछा, ''रथ में बैठे सरोवरेश्वर और कांचनमाला का क्या हुआ?''

मकरकेतु ने अपने को संभालते हुए कहा, ''बड़ा ही अनर्थ हो गया। हंसों का रथ जब आकाश में उड़ रहा था, तब गिद्धों की एक भीड़ ने उसपर हमला कर दिया। हंस भयभीत हो गये और तितर-बितर होकर जब भागने की कोशिश में लगे हुए थे, तब रथ डावांडोल हो गया। इसके कारण सरोवरेश्वर, रथ चालक और राजकुमारी महारण्य में कहीं गिर गये।''

यह समाचार सुनकर देवशर्मा, जयशील, सिद्धसाधक स्तंभित रह गये। ''राजकुमारी कांचनमाला जब इतनी ऊँचाई से गिरी, तब उसका बच पाना असंभव है। साधक, हमने अब तक जो भी मेहनत की, बेकार गयी। हम अपना वचन निभा नहीं सके,'' कहते हुए जयशील ने म्यान से तलवार निकाली और दूर फेंक दी।

''उसके पिता पर जो बीता, उसे जानते ही पद्ममुखी कुछ भी कर लेने में आनाकानी नहीं करेगी,'' यों कहते हुए देवशर्मा ने अपनी छड़ी ज़मीन पर दे मारी।

सिद्धसाधक ने सबके उदास चेहरों को देखते हुए कहा, ''निराश न हो! हो सकता है, रथ से वे दोनों किसी सरोवर में गिर पड़े हों या किसी वृक्ष पर। उन्हें ढूँढ़ने हम कुछ लोगों को भेजें और उन जल राक्षसों को महाकाल पर बलि चढ़ाने निकल पड़ें। माया सरोवर यहाँ से कितनी दूर है?''

सिद्धसाधक अपनी बात पूरी करे, इसके पहले ही नदी से ज़ोर-ज़ोर की चिल्लाहट सुनायी पड़ने लगी, ''जल राक्षस, जल राक्षस!''

जयशील के साथ सबने उस ओर मुड़कर देखा। भेड़ियों के सिरवाले कुछ राक्षस, पत्थरों से बनी गदाओं को उठाते हुए हंस रथ को घेरते तेज़ी से आगे बढ़े चले आ रहे थे। *(सशेष)*

राजा विक्रम
और वेताल की
नई कथाएँ

# जगन्नाथ का आदर

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे कंधे पर डालकर श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, बार-बार मेरे समझाने के बाद भी कष्ट झेलते जा रहे हो। मैं जो भी कह रहा हूँ, तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रहा हूँ। सच मानो, मैं तुम्हारा हितैषी हूँ। तुम जितना कष्ट झेल रहे हो, उन्हें देखते हुए लगता है कि तुम किसी महान लक्ष्य को साधने के प्रयत्न में जुटे हुए हो। परंतु इसकी पूर्ति के लिए विवेक और सूझ-बूझ की नितांत आवश्यकता है। तुममें शायद इनका अभाव है। देखा गया

है कि बड़े माने जानेवाले लोग भी इस भ्रम में पड़े रहते हैं कि उनका व्यवहार सबों के साथ एक समान है। पर दुख की बात तो यह है कि उनकी व्यवहार-शैली अविवेक से भरी होती है। उदाहरणस्वरूप मैं तुम्हें माधव शर्मा की कहानी सुनाऊँगा, जो एक महाकवि व विज्ञ माना जाता था। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' फिर वेताल माधव शर्मा की कहानी यों सुनाने लगा :

बहुत पहले की बात है। रामापुर नामक गाँव में जगन्नाथ नाम का एक संपन्न व्यक्ति था। वह सबका आदर करता था और सबके साथ उसका व्यवहार एक समान होता था। घर आये अपरिचित लोगों के साथ थी वह अपनों जैसा व्यवहार करता था। जो प्रमुख व्यक्ति रामापुर आते थे उसी के यहाँ ठहरते थे।

जगन्नाथ की ख्याति में उसी गाँव के रामचंद्र का भी योगदान था। ऐसे तो जगन्नाथ और रामचंद्र बचपन के दोस्त थे,पर उनकी व्यवहार शैली अलग-अलग थी। रामचंद्र के घर कोई आता तो उससे वह लंबी-चौड़ी बातें नहीं करता। माँगने पर ही वह पीने का पानी देता। उसकी बातों में बनावटीपन नहीं था। फिर भी जब कभी उसके रिश्तेदार उस गाँव में आते, उससे मिले बिना लौटते नहीं थे, क्योंकि वह धनी था।

रामचंद्र डंका पीटकर कहता था कि पैसे में परमात्मा है। धन से बढ़कर इस दुनिया में कुछ और नहीं। गाँववाले उसकी तुलना जगन्नाथ से करते और उसकी अत्यधिक प्रशंसा करते।

एक बार महाकवि माधव शर्मा उस गाँव में आया। माधव शर्मा, जगन्नाथ और रामचंद्र ने एक ही गुरु से शिक्षा प्राप्त की थी। उन दिनों माधव शर्मा शिक्षा में सबसे आगे था। जगन्नाथ और रामचंद्र को गुरु का बताया पाठ समझ में नहीं आता था, इसलिए लाचार होकर उन्हें माधव शर्मा की सहायता लेनी पड़ती थी।

उस दौरान जगन्नाथ ने एक बार माधव शर्मा से कहा था, ''तुम्हारे समझाने पर ही हम ठीक तरह से पाठ का अर्थ जान पाते हैं। तुम तो हमारे गुरु से भी अधिक बुद्धिमान हो।''

''गुरुजी के समझाने के पहले ये पाठ मेरी भी समझ में नहीं आते थे। तुम लोग भी ध्यान

लगाकर सुनो। हमारे गुरु महान हैं, उच्च कोटि के ज्ञानी हैं।'' माधव शर्मा ने जगन्नाथ से कहा।

माधव शर्मा ने यह बात एक दिन गुरु से भी कह दी। उन्होंने हँसते हुए कहा, ''गुरु से विद्या सीखने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता है। वह एकाग्रता तुममें है और उनमें बिलकुल नहीं। ध्यानचित्त होकर गुरु से जो शिक्षा पाते हैं, वे सुशिक्षित बनते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं। मित्रों से जो विद्या सीखी जाती है, वह तात्कालिक होती है। इसलिए उनसे कहो कि वे भी एकाग्रता की आदत डालें।''

उनका विद्याभ्यास समाप्त होने पर गुरु ने उन तीनों को आशीर्वाद देते हुए माधव शर्मा से कहा, ''तुम महाकवि और पंडित बनोगे। राजा का आश्रय पाकर साहित्य की सेवा में लग जाओ।'' फिर रामचंद्र को संबोधित करते हुए कहा, ''रामचंद्र, तुम्हारी दृष्टि व्यापार पर केंद्रित होगी। दूसरे का उपकार करो या न करो, पर किसी का अपकार मत करना।'' फिर जगन्नाथ की ओर मुड़कर गुरु ने कहा, ''तुम्हारे पुरखों ने तुम्हारे लिए बड़ी मात्रा में संपत्ति इकट्ठी कर रखी है। तुममें बड़ा कहलाने की तीव्र आकांक्षा है। इस दुनिया में केवल विद्या ही मनुष्य को बड़ा नहीं बनाती। बड़े लोगों का आदर-सम्मान करने से भी व्यक्ति बड़ा बन सकता है। अतिथि सेवा और सत्कार करने से तुम्हें बहुत यश मिलेगा।''

फिर जगन्नाथ और रामचंद्र दोनों स्वग्राम रामापुर लौट आये। माधव शर्मा ने राजा के आश्रय में महाकवि बनकर प्रसिद्धि पायी। एक बार रामापुर के ग्रामाधिकारी के निमंत्रण पर वह रामापुर आया। ग्रामाधिकारी ने उसका विशेष आदर-सम्मान करने के बाद उससे कहा, ''आप इस गाँव में अतिथि बनकर आये हैं, इसलिए ग्रामाधिकारी होने के नाते मैंने अपने घर में आपके रहने का प्रबंध किया है। अन्यथा साधारणतया जो भी प्रमुख लोग इस गाँव में आते हैं, जगन्नाथ के यहाँ ही ठहरते हैं और उनका आतिथ्य स्वीकार करते हैं। वे अतिथि सेवा के लिए प्रसिद्ध हैं।''

तब माधव शर्मा ने ग्रामाधिकारी से कहा कि मेरा उसी के यहाँ ठहरना उचित होगा। ग्रामाधिकारी ने भी सहर्ष यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और एक आदमी के ज़रिये यह ख़बर

जगन्नाथ को पहुँचायी। जगन्नाथ ने संदेश भेजा कि माधव शर्मा को तुरंत मेरे घर भेज दें। माधव शर्मा अपने शिष्य कुशल सहित जगन्नाथ के घर आ गया।

जगन्नाथ ने प्रेमपूर्वक उसका स्वागत किया। उनके रहने, खाने-पीने तथा उनकी सेवा के जो प्रबंध किये गये, उन्हें देखकर कुशल अवाक् रह गया।

दूसरे दिन से माधव शर्मा ग्रामवासियों को कविताएँ सुनाने लगा। ग्रामवासी उसकी प्रतिभा की भरपूर प्रशंसा करने लगे। दो दिनों के बाद रात को खाना खा चुकने के बाद माधव शर्मा ने रामचंद्र के बारे में पूछा।

''वह तो हमेशा व्यापार में मग्न रहता है। इस वक़्त गाँव में नहीं है। दो-तीन दिनों में शायद वापस आ जायेगा।'' जगन्नाथ ने कहा।

''इसका यह मतलब हुआ कि वह गुरुजी की बातों का अक्षरशः पालन कर रहा है। तुम भी गुरु की ही सलाह का पालन कर रहे हो।'' हँसते हुए माधव शर्मा ने कहा।

यह तुलना जगन्नाथ को खटकी। उसने कहा, ''यों हम दोनों की तुलना करना मुझे अच्छा नहीं लगा। गुरुजी ने रामचंद्र को आसान काम सौंपा। पर मेरी बात तो बिलकुल ही अलग है। बड़े लोगों की सेवा करना थोड़े ही सुगम कार्य होता है! उनके लिए फूलों से सजी गाड़ी भेजता हूँ। उनके विश्राम के लिए नये बिस्तरों का इंतज़ाम करता हूँ, उनके भोजन के लिए स्वादिष्ट व्यंजन बनवाता हूँ। रामापुर के इर्द-गिर्द विशिष्ट स्थलों को दिखलाने की व्यवस्था करता हूँ। जानते हो, इसके लिए मैंने कितनी मेहनत की, कितने कष्ट झेले? गुरुजी ने कह तो दिया, पर उन्हें क्या मालूम कि इसे अमल में लाना कितना मुश्किल है।''

जब माधव शर्मा, जगन्नाथ की प्रशंसा के पुल बाँध रहा था तभी रामचंद्र वहाँ आ गया। माधव शर्मा को देखते ही बहुत खुश होते हुए उसने उसे गले लगाया और कहा, ''जब तुम आये मैं गाँव में नहीं था। जब मालूम हुआ कि तुम हमारे गाँव आये हो तो मैं सब काम छोड़कर तुम्हें लेने चला आया। चलो, मेरे घर चलो।''

माधव शर्मा ने रामचंद्र को बहुत समझाया कि आज रात को यहीं ठहरकर कल तुम्हारे घर

आऊँगा, पर रामचंद्र ने उसकी एक न सुनी। माधव शर्मा और उसके शिष्य कुशल को रामचंद्र के घर जाना ही पड़ा।

इधर-उधर की बातें करने के बाद रामचंद्र ने कहा, ''सुना है कि तुम एक महाकवि हो। ज़रा अपनी एक कविता सुनाना।''

माधव शर्मा ने शुद्ध भाषा में कई कविताएँ सुनाईं। तब रामचंद्र ने कहा, ''कविता सुनने में तो अच्छी लग रही है, पर मैं रत्ती भर भी नहीं समझ सका।'' माधव शर्मा ने जब उसे उसका अर्थ समझाया, तब रामचंद्र ने कहा, ''अब तो पूरा-पूरा विषय समझ में आ गया। अवश्य ही तुम महान कवि हो, तुम्हारी कविता भी महान है। विद्याभ्यास के दौरान भी तुम्हारे समझाने पर ही हम पाठ समझ पाते थे।''

सबेरे उठे तो नहाने के लिए गरम पानी का इंतज़ाम नहीं किया गया। खाने के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था नहीं की गयी। सेवा के लिए दास-दासियों का प्रबंध नहीं था।

उसी दिन शाम को जगन्नाथ के घर से एक नौकर आया और बताया कि मालिक ने आप दोनों को अपने यहाँ रहने के लिए बुलाया है। कुशल जगन्नाथ के घर जाने के लिए छटपटा रहा था। पर रामचंद्र ने माधव शर्मा से कहा, ''माधव, मैं तो चाहता हूँ कि जब तक तुम इस गाँव में रहो, तब तक मेरे ही घर में रहो।''

माधव शर्मा ने ख़बर भिजवायी कि वह रामचंद्र के ही घर ठहरेगा। वह दो दिन और उसी गाँव में, उसी के घर रहा। जिस दिन वे वहाँ से निकल रहे थे, उस दिन रामचंद्र ने नये वस्त्र भेंट स्वरूप उसे दिये और कहा, ''किसी दिन जब मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा, ब्याज सहित वसूल करूँगा।''

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, माधव शर्मा के मित्रों में जगन्नाथ उत्तम व्यक्ति है। रामचंद्र संस्कारहीन है। फिर भी लगता है कि माधव शर्मा को रामचंद्र के यहाँ रहते हुए जितना आनंद मिलता था, उतना आनंद जगन्नाथ के यहाँ नहीं मिला। रामचंद्र ने अपने दोस्त को अपने घर आने के लिए निमंत्रण तो अवश्य दिया, परंतु उसके लिए आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध नहीं किया। यहाँ तक कि गरम पानी, स्वादिष्ठ आहार व विश्राम लेने के लिए मुलायम बिस्तरों की भी व्यवस्था नहीं की। फिर भी रामचंद्र का आतिथ्य-सत्कार ही माधव शर्मा को बेहतर लगा। जगन्नाथ के बुलावे के बाद भी उसका वहीं रहने का निर्णय इसका सबूत है। इसका क्या कारण हो सकता है, मेरी समझ में नहीं आता। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''निस्संदेह माधव शर्मा मनुष्यों को आंकने में सिद्धहस्त है। माधव जल्दी ही समझ गया कि जगन्नाथ स्नेहशील होने का नाटक मात्र कर रहा है। उसने माधव शर्मा से कहा था कि बड़े लोगों के स्वागत के लिए फूलों से सजी गाड़ी भिजवाता हूँ, आसपास के विशेष स्थलों को दिखाने का इंतज़ाम करता हूँ और स्वयं मैं और मेरा परिवार उन बड़े लोगों की सेवा में लगे रहते हैं। परंतु माधव के लिए इनमें से कोई भी काम उसने नहीं किया। वह जानता था कि माधव शर्मा गाँव में आया हुआ है, फिर भी जब तक ग्रामाधिकारी ने इसकी सूचना नहीं दी तब तक उसने उसे बुला लाने के लिए आदमी नहीं भेजा। लेकिन जैसे ही रामचन्द्र को मालूम हुआ कि माधव शर्मा जगन्नाथ के घर ठहरा हुआ है, खुद दौड़ा-दौड़ा चला आया और उसे अपने घर ले गया। यद्यपि वह आदर करना नहीं जानता था, फिर भी उसका थोड़ा-सा निस्वार्थ आदर, उस आदर से महान है, जिसके पीछे कोई स्वार्थ की भावना है। रामचन्द्र का आदर निस्वार्थ था, जबकि जगन्नाथ का आदर स्वार्थ की भावना से प्रेरित था।

यों राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

## कंघी लोगे?

कौन कहता है कि कंघी केवल बाल को साफ और स्थिर रखने के लिए है! स्पष्ट है कि यह बालों के साथ इसके संबंध के अतिरिक्त कुछ और भी है। उड़ीसा के एक आदिवासी जुआंग जाति के लोग कंघी को अपने रोमांस में प्रेम के प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं। यह उनके वैवाहिक समारोहों में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामुदायिक पर्वों पर जुआंग लड़के उन लड़कियों को कंघी का उपहार देते हैं जो उनके साथ नृत्य करती हैं। और यदि कोई जुआंग लड़की किसी लड़के से प्यार करने लगती है तो वह उसके प्रति अपना प्रेम सूक्ष्म रूप से प्रदर्शित करने के लिए उसकी कंघी चुरा सकती है। जुआंग वर विवाह के अवसर पर अपनी वधू को कंघी भेंट करता है। और अनुमान करो कि वह कंघी से क्या करती है! वर के बालों की कंघी, निस्सन्देह!

## रंगीन बादशाह

रंग, रंग, कौन-सा रंग तुम्हें चाहिए? अगली बार इस खेल को खेलो तो अपनी पसन्द में बादशाह अकबर के प्रिय रंगों को शामिल कर लेना। उसके शासनकाल के इतिहास - 'आइने अकबरी' में अकबर की अलमारी में रखे रंगों का वर्णन मिलता है जिनमें रूबी, सोना, नारंगी, पीतल, घास, रूई के फूल, चन्दन, बादाम, अंगूर, शहद, भूरा नीलक, सेब, सूखी घास, पिस्ता, चीनीमिट्टी के बर्तन नीला, आम तथा कस्तूरी के रंग शामिल हैं। इनके अतिरिक्त, वह कृमसन, बैंगनी, जामुनी, गुलाबी, हल्का नीला, नील लोहित तथा चटकीला गुलाबी भी प्रयोग में लाते थे। वे अवश्य ही एक रंगीन बादशाह होंगे।

# अनश्वर दैत्य

हिमालय की पादगिरि से अपने देश का शासन करनेवाले राजा दक्ष की पुत्री राजकुमारी दिति का विवाह कश्यप मुनि के साथ हुआ था। उन्हें अनेक पुत्रों को जन्म देने का गौरव प्राप्त था। लेकिन वे सभी दैत्य अथवा दानव थे जो हमेशा देवताओं से लड़ते-झगड़ते रहते थे। ये झगड़े प्रायः युद्ध में बदल जाते थे और फलस्वरूप सभी देवता मारे गये।

राजकुमारी दिति ने एकान्त में जाकर भारी तपस्या की। उन्होंने परमेश्वर पर अपना ध्यान एकाग्र कर उनसे प्रार्थना की कि मुझे ऐसे पुत्र का वरदान दें जिसे देवता मार न सकें।

उसकी प्रार्थना सुन ली गई। उसने एक ऐसे पुत्र को जन्म दिया जिसके एक हजार पाँव थे, एक हजार हाथ थे और दो हजार आँखें थीं। जब वह बड़ा हो गया तब वह असाधारण रूप से शक्तिशाली और शूरवीर निकला।

भला इसे कौन इनकार करेगा कि शक्ति और शूरवीरता उत्कृष्ट गुण हैं। महान लक्ष्यों की सिद्धि में कोई भी इनका प्रयोग कर सकता है। इनके द्वारा दुर्बलों की सहायता की जा सकती है और पृथ्वी के अज्ञात प्रदेशों की खोज की जा सकती है। लेकिन दिति का यह पुत्र इन गुणों का प्रयोग दूसरों को सताने में करता था। क्रमशः वह इतना अहंकारी हो गया कि वह अपने शुभ चिन्तकों के सभी परामर्शों का अनादर करने लगा। वह ऋषियों का अपमान करने लगा और प्रायः उन्हें सताने लगा। वह

अपनी शक्ति का प्रयोग लोगों पर अत्याचार करने में लगाने लगा। वह अहंकार से अंधा हो गया। इसलिए वह अन्धक अथवा दृष्टिहीन कहलाने लगा। उसकी माता ने अवश्य ही उसे अच्छा-सा नाम दिया होगा, लेकिन किसी का उसकी ओर ध्यान नहीं गया। वह अन्धक के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

जब उसे यह पता चला कि देवताओं ने उसके भाइयों की हत्या की है तब उसने उनसे बदला लेने का निश्चय किया। इसके बाद इस शक्तिशाली दैत्य और देवताओं में घोर संग्राम छिड़ गया। वह हरेक बार देवताओं को परास्त कर देता था। अपनी माता को प्राप्त वरदान के कारण उसे कोई मार नहीं सकता था। लेकिन देवगण उसके हाथों मारे जाने लगे।

लेकिन इस अन्धक नामक संकट को समाप्त करने के लिए कुछ किया जाना चाहिए था। देवता इसे मार नहीं सकते थे। इसलिए वे चिन्तित थे। लेकिन महान त्रिदेवों - ब्रह्मा, विष्णु, महेश-में से कोई भी एक इसे निस्संदेह वध कर सकता था। ये साधारण देवताओं की कोटि में नहीं आते थे। ये स्वयं परमेश्वर थे। इसलिए दिति को दिये गये वरदान से बाहर थे।

एक दिन देवर्षि नारद इस दैत्य से मिलने आये। वे उत्कृष्ट पुष्पों की एक माला धारण किये हुए थे। वे पुष्प न केवल अत्यन्त सुंदर थे, बल्कि उसकी सुगंध भी असाधारण थी। एक पल के लिए भी उसकी दृष्टि माला से हटती

नहीं थी। उसकी सुगंध ने उसे मदहोश बना दिया था। उसने इससे पहले ऐसे पुष्प न देखे थे, न इनके विषय में सुना था।

"हे मुनि, ये फूल आश्चर्यजनक हैं ! ये आपको कहाँ से मिले?" दैत्य ने पूछा।

"आकाश, पाताल और पृथ्वी - इन तीनों लोकों में केवल एक ही स्थान है, जहाँ ये पुष्प उपलब्ध हैं। यह मन्दार पर्वत पर है। फूल का नाम भी मन्दार है।"

"काश ! मैं ऐसी माला पहन पाता !" दानव ने आह भरते हुए कहा।

"यह माला आपको भेंट कर मुझे बड़ी खुशी होती, परंतु इसे मैं कई दिनों से धारण कर रहा हूँ और अब यह मुरझाने लगी है। इसके अतिरिक्त, आप जैसे दानव के लिए मुरझाई

हुई माला धारण करना शोभा नहीं देता।'' मुनि ने कहा।

''ठीक है। मुझे उस पर्वत पर ही जाना चाहिए जहाँ ये फूल मिलते हैं। वहाँ का वातावरण कितना अनोखा होगा? मैं स्वयं उस स्थान पर जाकर अनुभव करूँगा और कुछ फूलों को तोड़कर अपने लिए एक माला बनाऊँगा।'' दानव ने कहा।

उसने नारद से पर्वत पर जाने का मार्ग पूछा और उसी क्षण वहाँ जाने के लिए चल पड़ा। सचमुच ! पर्वत की चोटी पर बिखरी उस अनोखे फूल की प्रभूत राशि ने उसके मन को अभिभूत कर लिया। उसने तुरंत निश्चय किया कि अब वही उसी स्थान का स्वामी है और सिर्फ उसे ही उस मनमोहक दृश्य का आनन्द लेने का अधिकार है।

लेकिन अचानक उसकी दृष्टि उस प्राकृतिक सुषमा के मध्य घूमती हुई एक दम्पत्ति पर पड़ गई। तत्क्षण उसका मनोभाव बदल गया। वह क्रोध और ईर्ष्या से भर गया। वह इतना नहीं समझ सका कि वे पहले से ही वहाँ थे और वे सम्भवतः बाग के स्वामी हो सकते थे। दानवों और दैत्यों के साथ यह समस्या है कि वे जिस चीज़ को पसन्द करते हैं, उसे अपने अधिकार में कर लेना चाहते हैं।

''यहाँ आने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?'' दैत्य चीखा।'' यहाँ से तुरंत निकल जाओ, नहीं तो पहाड़ से नीचे फेंक दूँगा और तुम दोनों चटनी बन जाओगे।''

शायद उसे नहीं मालूम था कि वह भगवान शंकर और भगवती उमा से बात कर रहा है।

भगवान शिव ने उत्सुकता से उसकी ओर देखा। लेकिन दानव अधीर हो रहा था। उस स्थान का सौंदर्य और आनंद उसके क्रोध को शांत न कर सका। क्योंकि उन दोनों ने उसके आदेश का पालन नहीं किया, वह दाँत पीसते हुए उन्हें पकड़ने के लिए झपटा।

तभी भगवान शिव का त्रिशूल उस पर टूट पड़ा। वह पहाड़ से लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा और फिर कभी न उठ सका। इस प्रकार अन्धक दैत्य से देवताओं को मुक्ति मिल गई।
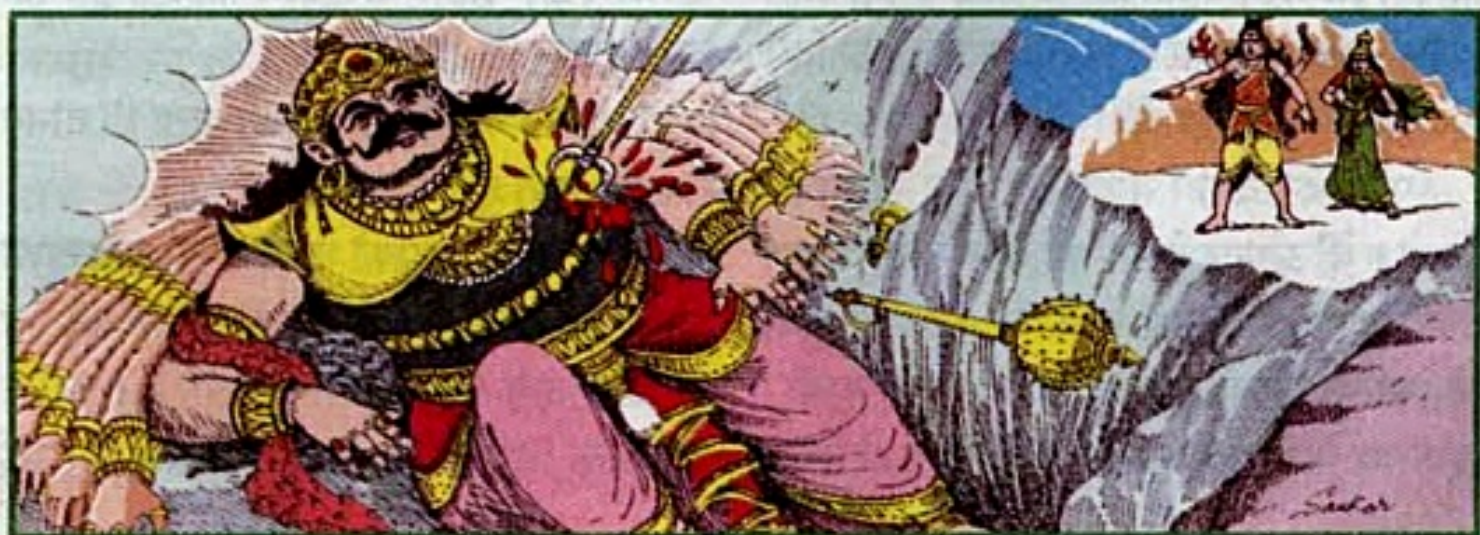
# दादी की कहानी

बहुत पहले की बात है। एक बूढ़ी दादी थी। उसका एक पोता था। दादी एकदम मासूम थी। उसकी मासूमियत का फ़ायदा उठाकर गाँववाली औरतें दादी से चिकनी-चुपड़ी बातें किया करतीं और नमक, दाल आदि ले जाया करती थीं। उसका पोता नहीं चाहता था कि उसकी दादी बाहर जाकर काम करे। वह उसे सुखी देखना चाहता था। इसलिए खुद मेहनत कर धन कमाता था। पर वह दादी के भोलेपन के कारण खर्च हो जाता था। कभी-कभी तो चंद्र उसपर नाराज़ हो उसे खरी-खोटी सुनाने लगता था।

तब दादी उसे समझाते हुए शांत स्वर में कहती, ''धीरे बोलो। तुम इतना भी नहीं जानते कि इस कमरे की बातें उस कमरे में सुनायी पड़नी नहीं चाहिए। यही परिवार चलाने का तरीक़ा है।''

''मेहनत करता हूँ और कमाता हूँ। तुम्हें बिठाकर खिलाता हूँ। फिर भी तुम जो चाहो, करती जा रही हो। तीन दिन भूखा रखूँगा तब जाकर मालूम हो जायेगा। ये उपदेश अपने आप बंद हो जायेंगे और इन्हें कुएँ में फेंककर गली में घूमती फिरोगी।'' पोते चंद्र ने नाराज़ होते हुए कहा।

पोते की बातों पर दादी ने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा, ''चुप भी करो। भगवान एक दिन के लिए भी तुम्हें ऐसा करने नहीं देंगे।''

जब एक दिन दादी घर में झाड़ू लगा रही थी तो उसे एक छोटी-सी चाभी मिली। उसे लगा कि यह चाभी शायद उसके पोते की टीन की संदूक की है, जिसमें वह अपने कपड़े रखता है। दादी ने संदूक खोलकर देखा। उसमें कपड़ों के साथ एक गठरी भी थी। उसमें बीस रुपयों के छुट्टे पैसे भरे पड़े थे।

''अरे वाह, मेरी जानकारी के बिना इतने रुपये छिपा दिये?'' यों कहती हुई गली में आ गयी और पड़ोस की औरतों को उसे दिखाने लगी।

जब वे सब इसी बात को लेकर आपस में बातें कर रही थीं तो दो लड़के हड़बड़ाते हुए वहाँ

- किशोर साहू -

आये और कहने लगे, ''चंद्र की दादी कहाँ है? चंद्र नारियल के पेड़ से गिर गया है। सिर में बड़ी चोट आयी है। गाँव के मुखिया की गाड़ी में उसे शहर ले जा रहे हैं। चंद्र ने कहा कि उसने अपनी संदूक में थोड़े रुपये रखे हैं। दादी से माँगकर वे रुपये ले आने के लिए हमसे उसने कहा।''

दादी रोने-बिलखने लगी। पैसों की थैली उसने उन्हें सौंप दी। वे धन लेकर वहाँ से चले गये। दादी रोती हुई देहरी पर बैठ गयी।

एक घंटे के अंदर ही चंद्र सिर पर चावल का बोरा लिए हुए वहाँ आ रहा था। दूर से आते हुए अपने पोते को देखकर दादी खुशी से पागल हो उठी और उसके बिलकुल पास जाकर पूछा, ''क्या दर्द कम हो गया? डाक्टर ने क्या कहा?''

पहले तो चंद्र की समझ में कुछ नहीं आया, पर उसकी बातों से सब कुछ समझ गया। नाराज़ होते हुए बोला, ''मेरी सारी मेहनत तुमने मिट्टी में मिला दी। मेरी तो बड़ी इच्छा थी कि और थोड़ा-बहुत धन कमाऊँ, शहर में व्यापार करूँ और तुम्हें और अधिक सुखी देखूँ। तुम्हारे भाग्य में यह बदा नहीं है। चली जाओ, अब से कभी भी मेरी आँखों के सामने मत आना।'' चिल्लाता हुआ बिना खाये वहाँ से चला गया।

पोते की तीखी बातों से दादी को बहुत दुख हुआ। वह अपने आप कहने लगी, ''छी ! ऐसी जिन्दगी गुज़ारने से अच्छा तो यही है कि घने जंगल में चली जाऊँ और पिशाचों के हाथों मर जाऊँ।'' फिर वह उस अंधेरे में चलती हुई एक बरगद के पेड़ के पास आयी और वहीं बैठ गयी। अपने ही आप बड़बड़ाने लगी, ''घना अंधेरा है। फिर भी, एक भी पिशाच नज़र नहीं आ रहा है।'' फिर वह ''पिशाचो ! पिशाचो !!'' कहकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।

दो छोटे-नाटे पिशाच उसके सामने आ धमके और कहने लगे, ''क्यों चिल्ला रही हो? हमसे तुम्हें क्या काम है?''

उन्हें देखकर खुश होती हुई दादी ने अपनी पूरी कहानी बतायी और कहा, ''मेरे पोते ने कड़वी और तीखी बातें कह दीं। अब जीने का क्या मतलब? मुझे मार डालो।''

दादी की बातें सुनकर छोटे पिशाच अवाक् रह गये। फिर वे आपस में धीमे स्वर में कहने लगे, ''दादी की बातों से लगता है कि बगुलों के तालाब के पास की झोंपड़ी में रहनेवाले चोर-लड़कों की यह करतूत है। किसी लड़की को धोखा देकर वे

अपने साथ ले आये। बेचारी वह लड़की रो रही है।'' फिर उन दोनों पिशाचों ने दादी से कहा, ''दादी, तुम्हारे पोते की रक़म दिला दें तो घर लौट जाओगी या मर जाने का ठान लिया है?''

खुश होती हुई दादी ने कहा, ''रक़म हाथ में आ जाए तो खुशी-खुशी घर चली जाऊँगी।''

उसकी स्वीकृति मिलते ही दोनों पिशाच उसे बगुलों के तालाब के पास की झोंपड़ी के पास ले गये और कहा, ''यहीं खड़े होकर देखना, झोंपड़ी में क्या तमाशा होनेवाला है।'' फिर वे दोनों पिशाच झोंपडी के अंदर चले गये।

अंदर एक अतिसुंदर लड़की चोर-लड़कों से रो-रोकर कह रही थी, ''मुझे छोड़ दो। चाहो तो, ये गहने और धन ले लो।''

इसपर वे लड़के ठठाकर हँस पड़े और कहने लगे, ''ऐसा कभी नहीं होगा। हममें से किसी से तुम्हें शादी करनी ही पड़ेगी।''

दूसरे ही क्षण वहाँ एक विचित्र घटना घटी। अब तक रोती हुई वह लड़की अचानक काली माँ की तरह उठी। उसकी आँखें लाल-लाल थीं। कोने में पड़ी एक लाठी उसने उठायी और लड़कों को पीटती हुई कहने लगी ''अब तक मैं दीन स्वर में प्रार्थना करती रही। पर तुमने मेरी बात सुनने से इनक

ार कर दिया। तुम लोगों ने मुझे क्या समझ रखा है? पिशाचों की नानी की प्यारी बेटी हूँ। अभी यहीं तुम लोगों की ऐसी-तैसी कर दूँगी।''

दोनों चोर लाठी के प्रहारों को सह नहीं पाये और भागते हुए झोंपड़ी के बाहर आ गये। जैसे ही वे द्वार के पास पहुँचे, छिपे पिशाच ने उन्हें कसकर पकड़ लिया और लड़की के पास ले गया। इस घटना से चोर भयभीत हो गये।

जो पिशाच लड़की पर हावी था, उसने दादी को अंदर बुलाया और चोरों से कहा, ''तुम्हीं लोग दादी को धोखा देकर उसका धन ले आये न?''

चोरों ने तुरंत ''हाँ, हाँ!'' कहा। वे डर के मारे थरथर काँप रहे थे। ''कितने नीच हो तुम दोनों। एक मासूम बूढ़ी को धोखा देते हो और उसके पोते की मेहनत का फल चुराकर लाते हो? शर्म नहीं आती तुम्हें? तुरंत उसका धन उसे लौटा दो।'' एक पिशाच ने कहा। चोरों ने चुपचाप पैसों की वह थैली दादी को दे दी।

जैसे ही दादी को थैली मिल गयी, पिशाच ने चोरों से कहा, ''लगता है, तुम नये-नये चोर हो। इसलिए सिर्फ लाठी से तुम्हें पीटा। नहीं तो

तुम दोनों की बोटी-बोटी खा जाते। चले जाओ और मेहनत करके ज़िन्दगी बिताओ।''

चोर तुरंत वहाँ से भाग गये। इसके बाद फ़ौरन पिशाच अपने असली रूप में प्रकट हुए। उन्हें देखते ही लड़की डर गयी। पिशाचों ने उससे मीठी बातें कीं और उसे शांत किया। तब जाकर उस लड़की ने अपना नाम लक्ष्मी बताया और कहा कि उसकी सौतेली माँ ने उसे बहुत सताया। वह दुख सह नहीं पायी और सौतेली माँ के गहने और थोड़ा-सा धन लेकर घर से भाग आयी। फिर चोरों ने उसे पकड़ लिया।

पिशाचों ने लक्ष्मी को दादी और उसके पोते की कहानी सुनायी और कहा, ''तुम बहुत सुंदर व सुशील लड़की हो। हमें लगता है कि तुम दादी के पोते चंद्र से शादी करोगी तो अच्छा होगा। दादी, तुम्हारा क्या विचार है?''

पिशाचों की बातों पर दादी बेहद खुश होती हुई बोली, ''कहने के लिए क्या रखा है? तुमने तो मेरे मन की बात छीन ली।'' इतने में चंद्र की ''दादी, दादी!'' की चिल्लाहट सुनायी पड़ी।

दादी ने तुरंत लक्ष्मी का हाथ पकड़ लिया और चिल्ला पड़ी, ''पोते चंद्र, मैं यहाँ हूँ।''

चंद्र दादी के पास आया और रुआँसे स्वर में कहा, ''नाराज़ी में आकर मैंने कुछ कह दिया और तुम अंधेरे में जंगल चली आयी। तुम्हारे बिना मैं कैसे ज़िन्दा रह सकता हूँ।''

उसकी बातों पर हँसती हुई दादी ने कहा, ''धन आख़िर गया कहाँ? तुम्हारे लिए लक्ष्मी जैसी पत्नी को लेकर आया है। इसे देखो।'' कहती हुई लक्ष्मी को आगे खींचा और पोते को दिखाया।

लक्ष्मी की सुंदरता पर चंद्र रीझ गया। लक्ष्मी ने उसे देखते ही शर्म के मारे सिर झुका लिया। चंद्र को आते हुए देखकर छिपे पिशाचों ने कहा, ''वाह, कितनी अच्छी जोड़ी है। कल्याणमस्तु!'' कहते हुए झोंपड़ी से अदृश्य हो गये।

दो हफ़्तों के बाद मंदिर में चंद्र और लक्ष्मी की शादी हुई। पत्नी के दिये धन से उसने शहर में व्यापार शुरू कर दिया। खूब धन कमाया। पति-पत्नी दादी की अच्छी देखभाल करने लगे। चंद्र की पत्नी लक्ष्मी तो हमेशा उसी की सेवा में लगी रहती थी। अब दादी महारानी की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने लगी।

# समाचार झलक

## टिया के टिप्स

लन्दन की पाँच वर्षीय टिया लेवर्न रॉबर्ट्स शेयर बाजार में कभी नहीं गई, लेकिन वह संकेत दे सकती है।

एक विशेष दिन पर कुछ प्रमुख पावतियों में १६ प्रतिशत गिरावट आई, किन्तु उसके शेयर की फाइल ५.८ प्रतिशत ऊपर चली गई, क्योंकि उसने सही भविष्यवाणी की थी। उसी दिन शेयर बाजार के एक जाने-माने विश्लेषण कर्ता ने ४६ प्रतिशत से अधिक घाटा उठाया और एक ज्योतिषी की फाइल में ६.२ प्रतिशत गिरावट आई।

वर्ष के अंत तक अगले छः सप्ताह में उसके प्रतिष्ठित शेयरों के संकलन में कैडबरी श्विप्स, प्रूडेंशियल तथा पियर्सन थे।

## शहर नहीं, जंगल

सोलह वर्षीय जन्तन बाहरी ने स्कूल जाने से तथा शहरी वातावरण में रहने से मना कर दिया है। उसने अधिकारियों से जो उसके पास आकर्षक प्रोत्साहन और प्रस्ताव के साथ गये थे, कहा कि वह जंगल में रहना अधिक पसन्द करेगा।

वह मलयेशिया में तिमोक की सबसे छोटी उत्तरजीवित आदिवासी जाति का है। ''मुझे जंगल से प्यार है। मैं इसे शहरी जिन्दगी के लिए नहीं छोड़ूँगा।'' उसने दृढ़ निश्चय के साथ कहा जो उसके चेहरे पर साफ झलक रहा था। वह काष्ठ के धनी पहंग राज्य के निकट एक जंगल में नौ सदस्यों के परिवार के साथ लकड़ी की एक कुटिया में रहता है। ''जंगल हमें आन्तरिक शांति देता है।'' पिता बाहरी कुपी ने बताया। ''प्राकृतिक जंगल प्रेरणा और शक्ति देता है। मेरे बच्चे यहीं रहेंगे, यहीं मरेंगे।''

# सहज गुण

राम और भीम पड़ोसी थे। राम संपन्न था। ऐसे तो भीम बिलकुल ग़रीब नहीं था पर उसकी संपत्ति बहुत सीमित थी। फिर भी गाँव के लोग उसकी उपकार-वृति की काफ़ी प्रशंसा करते थे।

इसी कारण राम उससे जलता था। उसने एक दिन निश्चय कर लिया कि लोगों की प्रशंसा पाने के लिए मुझे भी कुछ न कुछ करना होगा। उसके घर दान माँगने कोई आता तो वह दान देने लगा। गाँव के मंदिर के लिए भी उसने बड़ी रक़म दी। फिर भी लोग उसकी प्रशंसा नहीं करते थे।

एक दिन राम का दूर का एक रिश्तेदार गोविंद उसके घर आया। राम ने गोविंद को अपना दुखड़ा सुनाया तो उसने कहा, ''इस संसार में प्रचार का बड़ा महत्व है। छोटा-सा भी उपकार करो, उसका प्रचार होना चाहिए। जिसने तुमसे सहायता पायी, अगर वह तुम्हारी उदारता का प्रचार करे तो तुम्हें हद से ज्यादा नाम मिलेगा। चार दिनों में प्रमोद नामक एक व्यक्ति यहाँ आनेवाला है। उसका तुम आदर करोगे तो तुम्हारा बड़ा लाभ होगा।

''प्रमोद इस गाँव में महातंत्री नामक पंडित से तंत्रशास्त्र सीखने आनेवाला है। जब तक वह शास्त्र सीखता रहेगा, तब तक उसे अपनी रसोई स्वयं बनानी होगी। घर के अंदर आना मना है। इसलिए उसे किसी के घर के बाहर सख्त ज़मीन पर उसे सोना होगा। ये नियम हैं, जिनका उल्लंघन किसी भी हाल में उसे करना नहीं चाहिए। वह गाँव के किसी पेड़ के नीचे बैठकर अपनी रसोई बनायेगा।'' राम ने सोचा कि इसकी सहायता करूँगा तो वह अवश्य उसकी

- कपिल जोशी -

उदारता की प्रशंसा करेगा और गाँव में इसका प्रचार करेगा।

गोविंद से प्रमोद के बारे में जानकारी पाकर राम बहुत प्रसन्न हुआ। उसने ज़ोर देकर कहा, ''देखो, प्रमोद को मेरे ही घर भेजना।'' गोविंद ने ''हाँ'' कह दिया और जिस काम के लिए वह गाँव आया था, उसे पूरा करके चला गया।

इसके दो दिनों के बाद प्रमोद राम के घर आया और कहा, ''महोदय, आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है। आपके घर के साये में मेरा विद्याभ्यास पूरा होगा तो अपने को धन्य समझूँगा।''

प्रमोद सबेरे ही उठ जाता और नदी के किनारे जाकर दिनचर्या पूरी कर लेता। फिर स्नान कर किसी वृक्ष का फल तोड़कर खा लेता। तब वह महातंत्री के घर जाकर दुपहर तक विद्याभ्यास करता। फिर नदी तट पर जाकर वह रसोई बनाता। इसके बाद फिर महातंत्री के घर जाता और उनकी दी पुस्तकों से मुख्य विषयों को तालपत्रों पर लिख लेता।

उस गाँव में हर कोई रीति के अनुसार अपने घर के चबूतरे पर एक जलता हुआ दीप रखता था। प्रमोद उस दीप की कांति में तालपत्रों पर लिखे गये अपने विषय को पढ़ लेता था। अगर कोई संदेह होता, तो दूसरे दिन महातंत्री से पूछकर अपना संदेह दूर कर लेता था।

यों चार दिन गुज़र गये। यद्यपि प्रमोद से उसे कोई कष्ट नहीं पहुँच रहा था फिर भी राम को लगने लगा कि प्रमोद को उससे बहुत लाभ पहुँच

रहा है। राम के घर के लोगों के दिलों में भी यही भावना घर कर गयी।

राम अब प्रमोद से असंतुष्ट था। उसकी शिकायत थी कि प्रमोद उसकी प्रशंसा नहीं कर रहा है और लोगों से उसकी उदारता के बारे में बता नहीं रहा है। उसकी पत्नी भी प्रमोद से नाराज़ थी, क्योंकि वह उनके चबूतरे पर सो रहा था, पर उनके प्रति कोई आदर-भाव दिखा नहीं रहा था। राम के बच्चे भी प्रमोद से असंतुष्ट थे, क्योंकि वह उन्हें कहानियाँ नहीं सुनाता था। एक सप्ताह के बाद राम ने प्रमोद से अपने मन की बातें बता दीं।

प्रमोद ने इसपर बहुत दुखी होते हुए कहा, ''अभी मेरा सारा ध्यान अध्ययन पर ही केंद्रित है। इसी कारण मैंने शायद आपके दिलों को

लोग अपने-अपने चबूतरों पर छोटे-छोटे दीप रखते हैं। पर हम अपने स्तर के अनुकूल बड़ा दीप रख रहे हैं। आज से उस दीप के लिए तेल का पूरा खर्चा तुम्हें ही उठाना पड़ेगा।''

नियम के मुताबिक अध्ययन-काल में हर दिन का खर्चा सीमित था। अगर वह तेल के लिए खर्च करता तो अपने आहार के खर्च में कटौती करनी पड़ती। इसलिए उसने राम से साफ़-साफ़ बता दिया कि तेल का खर्चा उठाना उसके लिए संभव नहीं। राम एकदम बौखला उठा और चबूतरे पर दीप को रखने का सिलसिला बंद कर दिया। इसलिए प्रमोद अब भीम के चबूतरे पर रखे दीप की कांति में पढ़ने लगा।

यह देखते हुए राम ने भीम से कहा, ''जानता तो नहीं कि चबूतरे पर जलते दीपक को रखने की प्रथा क्यों शुरू हुई, पर उससे लाभ उठानेवाले कृतज्ञता तक नहीं जताते। चबूतरे पर सोने की अनुमति देने के बाद भी वे ऐसा व्यवहार करते हैं मानों हमने उनके लिए कुछ नहीं किया। मैंने प्रमोद से तेल का खर्चा उठाने को कहा तो अब वह तुम्हारे चबूतरे पर दीप के प्रकाश में पढ़ रहा है और हमारे चबूतरे पर सो रहा है। ऐसे लोगों को सबक़ सिखानी है। तुम भी आगे से जलता दिया अपने चबूतरे पर न रख। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।''

भीम ने कहा, ''मैं जानता ही नहीं कि वह लड़का हमारे चबूतरे पर पढ़ रहा है। अब से वहाँ बड़ा दीप रखने का इंतज़ाम कर दूँगा।''

दुखाया। मैं अवश्य अपनी ग़लतियों को सुधारूँगा और आप सब लोगों को संतुष्ट करूँगा।''

उस दिन से प्रमोद राम के घरवालों से थोड़े समय तक बातें करने लगा। चार दिनों के बाद उस घर के सब लोग प्रमोद को कोई न कोई काम सौंपने लगे। राम उसे खेत भेजने लगा, उसकी पत्नी चीज़ें खरीदकर लाने के लिए दुकान भेजने लगी, बच्चे जिद करने लगे कि वह उनके साथ खेल-कूद करे।

दो-तीन दिनों के बाद यह सब कुछ देखते हुए प्रमोद को लगा कि ऐसा होते रहने से उसकी पढ़ाई ठीक नहीं चलेगी। तब से जो भी काम उसे सौंपा जाता, वह उसे करने से इनकार करने लगा। राम नाराज़ हो उठा। उसने प्रमोद से कहा, ''सब

"तो क्या उसकी पढ़ाई के लिए अपने तेल का खर्चा और बढ़ाओगे?" चिढ़ते हुए राम ने कहा।

"भगवान की दया से इस साल तिल की अच्छी फ़सल हुई है। घर में भी मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं। इस लड़के की पढ़ाई के उपयोग में आया तो इसे अपना भाग्य समझूँगा। पता नहीं, तुम किन-किन कष्टों का सामना कर रहे हो पर मैं तो कष्टों से मुक्त हूँ। मैं आज ही प्रमोद से कहूँगा कि वह हमारे चबूतरे पर सोये भी।" भीम ने कहा।

राम क्रोधित हो उठा, पर चुप रह गया। उसने सोचा कि किसी दिन उसी की तरह भीम भी प्रमोद से ऊब जायेगा और निकल जाने को कहेगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ। घर के चबूतरे के दीप को भीम ने बड़ा ही नहीं किया बल्कि उसने प्रमोद के लिए तालपत्रों के एक पंखे का भी इंतज़ाम कर दिया। भीम के बच्चे समय मिलने पर उसके लिए दुकान से चीज़ें भी खरीदकर ले आने लगे और सूखी लकड़ियाँ जुटाने में भी उसकी सहायता करने लगे। जब तक पढ़ाई पूरी नहीं हुई, तब तक प्रमोद उस जगह से हिला नहीं। पढ़ाई पूरी कर चुकने के बाद प्रमोद भीम की और उसके परिवार की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा। उनके श्रेष्ठ गुणों व उसकी उदारता का ज़ोर-ज़ोर से प्रचार करने लगा। भीम के धर्मगुणों के बारे में पूरा गाँव जान गया। सारा गाँव एक होकर उनकी प्रशंसा के गीत गाने लगा।

कुछ दिनों के बाद पुनः आये अपने रिश्तेदार गोविंद से राम ने कहा, "तुमने प्रमोद को हमारे घर भेजकर हमें नाम कमाने का एक अवसर दिया। पर मेरी समझ में अब भी नहीं आता कि मैं इस अवसर का क्यों फ़ायदा नहीं उठा पाया?"

गोविंद ने इसपर हँसते हुए कहा, "हमें भले ही कोई कष्ट न हो, पर दूसरों को लाभ उठाते हुए देखकर हमें ईर्ष्या होने लगती है। ईर्ष्यालु न होने के लिए धर्म, उपकार आदि श्रेष्ठ गुणों का हममें सहज रूप से होना ज़रूरी है। बुरा न समझना। भीम की उपकार-वृति उसका सहज गुण है। वह तुम्हारा सहज गुण नहीं है।"

# राजस्थान की एक लोक कथा

*क्षात्रधर्मी राजे, अलंकृत ऊँट, निर्जल मरुभूमि, शानदार किले, दिलेर लोग! राजस्थान का नाम लेते ही यह दृश्य आँखों के सामने सजीव हो जाता है। विश्व की प्राचीनतम पर्वत शृंखलाओं में से एक अरावली पहाड़ियों से लेकर देश की एकमात्र मरुभूमि थार रेगिस्तान के रेतीले टीलों तक राज्य प्राकृतिक दृश्य की एक समृद्ध विविधता प्रस्तुत करता है।*

*वर्तमान राजस्थान, जो कभी राजाओं का गढ़ था, सन् १९५६ में १९ रजवाड़ों और तीन सरदारों का एक संगुटीकरण बनाया गया। राज्य का क्षेत्रफल ३४२, २३९ वर्ग कि.मी. है।*

*राजस्थान की सीमाएँ मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब तथा हरयाणा से लगती हैं। काफी दूर तक यह पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा को स्पर्श करता है।*

*राज्य की जन संख्या ५६, ४७३, १२२ है। जयपुर यहाँ की राजधानी है। यहाँ की राजकीय भाषा हिन्दी है। राजस्थानी और अंग्रेजी भी बोली जाती है। हिन्दी की अनेक बोलियाँ जैसे - मारवाड़ी, मेवाड़ी, हडोती, तथा मेवाती भी लोग बोलते हैं।*

## सुयोग्य बेटी

जब वृद्ध ठाकुर अरि सिंह बीमार पड़ गये तब उन्होंने अनुभव किया कि वे अब बहुत दिनों तक जीवित नहीं रह पायेंगे। उन्होंने अपने परिवार तथा अन्य संबंधियों को अपनी शैया के पास बुलाया। उसकी एक मात्र संतान एक सुंदर कन्या, लालाई, उसके झुर्रीदार हाथों को सहलाती हुई वहाँ खड़ी थी।

उसके संबंधियों ने पूछा, ''ठाकुर जी, आपकी अंतिम इच्छा क्या है? बताइये, हम उसे पूरी करेंगे।''

''मैं जो कुछ करना चाहता था, मैंने स्वयं उसे

कर लिया है।'' ठाकुर जी ने धीमी आवाज में कहा। ''लेकिन हमारी दो इच्छाएँ पूरी न हो सकीं।''

''वे क्या हैं? पिताजी !'' लालार्दे ने पूछा।

''मेरे बच्चे ! मेरी इच्छा है कि मेरे घर में *टोडरमल* गाया जाये।''

*टोडरमल* एक परम्परागत विवाह गीत है जिसे दुल्हा द्वारा घर में दुल्हिन के लाने पर स्त्रियाँ गाती हैं। अरि सिंह का कोई बेटा नहीं था। इसलिए उसके घर में *टोडरमल* कैसे गाया जा सकता था? कुछ देर तक चुप्पी के बाद एक व्यक्ति ने कहा, ''यह तभी संभव है यदि आप किसी बच्चे को गोद लेकर अपना बेटा बना लें।''

लेकिन अरि सिंह केवल आह भर सका और सिर हिलाकर धीमे स्वर में बोला, ''इसके लिए बहुत देर हो चुकी है।''

''मेरी दूसरी इच्छा यह है कि गुजरात के कुछ प्रसिद्ध घोड़ों को मेरे परिवार के लिए लाया जाये।'' उसने थोड़ी देर रुक कर कहा।

सबके मुँह से आह निकल गई। ''यह असम्भव है !'' सब बुदबुदाये।

''यदि आपका कोई वीर बेटा होता तो वह आपकी इस इच्छा को पूरा कर देता।'' उदासी से सिर हिलाते हुए एक व्यक्ति ने कहा। भीड़ छँट गई।

लालार्दे पिता के पास अकेली खड़ी थी।

''पिता जी !'' अपने हाथ में पिता के गठीले हाथ को दबाकर वह बुदबुदाई। उसके सुंदर नेत्रों में आँसू छलक आये थे। ''पिता जी, मैं आपकी दोनों इच्छाएँ पूरी करूँगी।''

ठाकुर ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा। उसकी आँखों में दृढ़ संकल्प की आग उसके छलकते आँसुओं की बूंदों में प्रतिबिंबित हो रही थी। ''धन्यवाद मेरे बच्चे ! भगवान तुम्हें बल दें।'' उसने आशीर्वाद दिया। कुछ मिनटों में उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

लालार्दे अपने पिता की अंतिम अभिलाषा पूरी करने के लिए चल पड़ी। उसने एक युवक का वेश बना लिया और अपने लम्बे अलकों को पगड़ी में छिपा लिया। फिर हाथ में एक लम्बी तलवार ले अपने घोड़े को गुजरात की ओर सरपट दौड़ा दिया।

मार्ग में उसी उद्देश्य से जानेवाले उसे दो व्यक्ति मिले। एक राजपूत योद्धा था, दूसरा नाई था। तीनों मित्र बन गये और लक्ष्य की ओर आगे बढ़े।

वे अन्ततः उस नगर में पहुँचे, जहाँ प्रसिद्ध घोड़ों

की नस्लें तैयार होती थीं। गुजरात के राजा के अनोखे घोड़ों को अस्तबल में नहीं रखा जाता था, बल्कि उन्हें खुले मैदान में छोड़ दिया जाता था जिनकी रक्षा राजा के सुरक्षा बलों की विशिष्ट टुकड़ी करती थी। राजा ने घोषणा की थी कि जिन्हें घोड़े बेहद पसन्द हैं, वे जितना चाहें घोड़े ले जा सकते हैं, लेकिन एक शर्त पर कि उन्हें घोड़ों की रक्षा करनेवाले राजा के सुरक्षा बलों को परास्त करना होगा।

उस बड़े मैदान के एक कोने में एक ढोल था। जो कोई घोड़ा ले जाना चाहता था, उसे ढोल पीटना पड़ता था। इससे सुरक्षा बल के सिपाही वहाँ आ जाते थे। यदि घोड़ा ले जाने की अभिलाषा रखनेवाला हार जाता तो उसे खाली हाथ लौट जाना पड़ता। यदि वह जीत जाता तो जितने घोड़े चाहे वह ले जा सकता था। लेकिन अश्व रक्षक बल के सैनिक इतने शक्तिशाली होते थे कि किसी के लिए उन्हें हरा पाना सम्भव नहीं होता था।

यही कारण था कि ठाकुर अरि सिंह के संबंधियों को उनके लिए गुजरात से घोड़ा ले जाने की कोशिश करने का साहस नहीं हुआ।

जब तीनों मित्र घोड़ों के मैदान में पहुँचे तो लालार्दे ने ढोल बजाने का और सिपाहियों का सामना करने का निश्चय किया। "क्या तुम अपने मैदान से हमारे ले जाने के लिए सर्वोत्तम घोड़ों को चुन सकते हो? उसने राजपूत योद्धा से पूछा। वह सहमत हो गया।

जब वह नाई के साथ घोड़ों का चुनाव करने गया, लालार्दे ने विशाल ढोल को पीटना शुरू किया। सैनिकों का एक बहुत बड़ा दस्ता वहाँ पहुँच गया। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि केवल एक युवक वहाँ खड़ा ढोल पीट रहा है। "चले जाओ।" सेना प्रमुख ने उपहास किया। "एक व्यक्ति की सेना से हम युद्ध नहीं करते। केवल बड़ी सशस्त्र सेनाएँ यहाँ घोड़ों के लिए आते हैं।"

लेकिन लालार्दे अविचल खड़ी रही। "ओह आ जाओ।" उसने अपने बल्लम को उछालते हुए ललकारा। "मैं अकेला ही तुम सब को मात कर दूँगा।"

"ओह ! ओ !" सेना प्रमुख हँसा। "अपनी शक्ल देख लो ! कैसी बातें कर रहे हो? अभी तो तुम्हारी मूँछें भी नहीं उगी हैं !

लालार्दे ने करारा जबाव दिया, "यदि तुम्हें मेरी शक्ति पर संदेह है तो मैं अपनी तलवार धरती में गाड़ देता हूँ। यदि तुम्हारा कोई सैनिक इसे

# कला और दस्तकारी

चित्रांकन राज़स्थान की प्राचीन कला है। राजस्थान का लघु चित्रांकन शायद भारतीय चित्रकला की सर्वाधिक चित्ताकर्षक और विशिष्ट शैलियों में गिना जाता है। यहाँ की चित्रकला की अनेक शैलियाँ हैं, जैसे - मेवाड़, कोटा, जयपुर, बीकानेर तथा मारवाड़ शैली। इनमें से प्रत्येक की अनोखी विशिष्टताएँ हैं। अलग-अलग शैली की अलग-अलग विषय-वस्तु होती है। कोटा शैली में पहाड़ियों, नदियों, जंगलों तथा आखेट जैसे आसपास के प्राकृतिक दृश्यों को चित्रित किया जाता है। भगवान कृष्ण के जीवन से लिये गये दृश्य चित्रकला की सभी शैलियों के लोकप्रिय विषय हैं।

राजस्थान अपने आभूषणों के लिए भी प्रसिद्ध है। मुगल काल में यह राज्य स्वर्ण आभूषणों का एक बहुत बड़ा उत्पादन-केन्द्र था। यहाँ की स्वर्ण मीनाकारी भी प्रसिद्ध है। जयपुर, मीनाकारी और बहुमूल्य तथा अल्पमूल्य के रत्नों के लिए प्रसिद्ध है। आज भी स्वर्ण के अतिरिक्त चाँदी तथा अन्य धातुओं पर मीनाकारी की जाती है।

बाहर खींच ले तो मैं हार मानकर वापस चला जाऊँगा।'' सैनिकों को इस छरहरे युवक की असाधारण चुनौती पर हँसी आ गई।

लालार्दे ने अपनी तलवार धरती में रोप दी। एक सैनिक ने उठकर उसे धरती से बाहर निकालने की कोशिश की। ऊफ ! इसे कितनी कुशलता से संस्थापित किया गया है ! उसने भरसक प्रयास किया, पर सफल न हो सका।

तब वह पीछे हट गया और दूसरा सैनिक आगे आया। और फिर तीसरा, चौथा... । लेकिन कोई भी तलवार को बाहर नहीं निकाल सका। यहाँ तक कि सेना प्रमुख ने भी अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर वह असफल रहा। वे चुपचाप वापस चले गये और मैदान छोड़ दिया।

लालार्दे ने धरती से अपनी तलवार खींच ली। तलवार खींचते समय झटका लगने के कारण उसकी पगड़ी गिर गई और उसके बाल पीठ पर बिखर गये। उसने एक उच्छ्वास सुना। उसने पीछे मुड़कर देखा। यह नाई था। ''तुम नारी हो !'' चकित होकर वह चिल्लाया। लालार्दे उसे घूर कर देखने लगी।

राजपूत योद्धा तीनों के लिए घोड़ों का बँटवारा कर रहा था। नाई की चीख सुनकर वह पीछे मुड़ा। जब उसने देखा कि उसका साथी स्त्री है तब उसे

यह जानने की इच्छा हुई कि उसने युवक का वेश क्यों बनाया। लालार्दे ने अपनी सारी कहानी स्पष्ट रूप से उसे बता दी।

योद्धा उससे बहुत प्रभावित हो गया। "तुम एक वीरांगना और साहसी बाला हो। कौन कहता है कि केवल पुरुष युद्ध कर सकते हैं या घुड़सवारी कर सकते हैं और जोखिम भरा कार्य कर सकते हैं। कोई भी पुरुष इससे अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकता।"

"लेकिन मेरा जीवन-लक्ष्य अभी पूरा नहीं हुआ है। मुझे यह निश्चित कर लेना है कि *टोडरमल* मेरे घर में गाया जायेगा। इसीलिए यह छद्म वेश आवश्यक है।" वह रहस्यमय ढंग से बड़बड़ाई।

लेकिन योद्धा सम्भवतः इसकी बात नहीं सुन सका। "तुम्हारी जैसी लड़की को ही ढूँढ़ रहा था मैं। क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?" उसने पूछा।

लालार्दे ने तुरंत निर्णय ले लिया। पिता की दूसरी अभिलाषा पूरी करने का यहाँ मौका है। "हाँ, मैं करूँगी।" उसने पट उत्तर दिया। "लेकिन एक शर्त है। इस शादी में मैं वर बनूँगी और तुम्हारे

# क़िला और महल

राजस्थान किलों और महलों की भूमि है। अधिकांश किले पहाड़ियों की चोटी पर बने हुए हैं, नदियों के निकट नहीं। अन्य स्थानों पर बने क़िलों की तरह इनके चारों ओर खाइयाँ भी नहीं हैं। ऐसा इसलिए कि वहाँ से बंदूकों से छोड़ी गई गोलियाँ निश्चित रूप से अधिक दूरी तक मार कर सकें। सबसे पुराना किला चित्तौड़ में एक एकान्त पहाड़ी की चोटी पर है। अन्य सुप्रसिद्ध किले रणथम्भौर, जैसलमेर, अम्बेर, नाहरगढ़, बून्दी, जोधपुर तथा बीकानेर में हैं।

महाराजाओं की भूमि होने के कारण राज्य में स्वाभाविक ही महलों का प्राचुर्य है। जयपुर का अम्बेर महल राजपूत वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उदयपुर का झील महल पत्थर का एक दूसरा वास्तु कलात्मक चमत्कार है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा महल है। अन्य प्रसिद्ध महल हैं - जयपुर का सीटी महल तथा जैसलमेर महल।

# दर्शनीय स्थल

राजस्थान की राजधानी जयपुर को गुलाबी शहर भी कहा जाता है। यह पर्यटकों का बहुत बड़ा आकर्षण-केंद्र है। हवा महल तथा जन्तर-मन्तर यहाँ के दर्शनीय स्थान हैं।

राज्य का एक मात्र पहाड़ी सैरगाह माउण्ट आबू इस रेगिस्तानी राज्य का हरित शाद्वल है। स्तम्भित कर देनेवाली वास्तुकला और मूर्तिकला के लिए विख्यात दिलवारा जैन मंदिर यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण है।

यह राज्य अनेक पशु-पक्षियों का आश्रय-स्थल भी है। भरतपुर राष्ट्रीय पार्क विश्व की सबसे बड़ी बकपालनशालाओं में से एक है। रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क एक विख्यात टाइगर रिजर्व है।

घर में बरात लाकर तुम्हें दुल्हन के रूप में सजाकर अपने घर ले जाऊँगी।''

योद्धा भौचक्का रह गया। क्या वह स्त्री का वेश धारण करने को राजी होगा? और वह भी उसे विशेष दिन पर, अपने विवाह के दिन? नाई ने सब कुछ सुन लिया था। ''मूर्ख न बनो।'' उसने सलाह दी। ''तुम्हें बहुत थोड़े समय के लिए ही तो स्त्री बनना पड़ेगा! फिर तुम्हें ऐसी लड़की नहीं मिलेगी।''

बहुत सोच-विचार के पश्चात वह सहमत हो गया। नाई ने प्रसन्न होकर विवाह का प्रबंध किया।

शादी के दिन लालार्दे वर का वेश धारण कर 'दुल्हन' के घर बरात ले गई और विवाह के उपरान्त 'दुल्हन' 'दुल्हा' के पीछे-पीछे उसके घर आई। लालार्दे के घर के द्वार पर स्त्रियाँ खड़ी थीं। वे आनन्दित हो 'बेटे' और उसकी 'दुल्हन' का स्वागत करने के लिए *टोडरमल* गाने लगीं। लालार्दे ने अपने पिता की अंतिम इच्छाएँ पूरी कर दीं।

और इसीलिए, आज भी, राजपूत कहते हैं कि ''नालायक बेटे से कहीं अच्छी होती है एक सुयोग्य बेटी।''

# अपने भारत को जानो

*इस महीने की प्रश्नोत्तरी का केन्द्र भारत और खेल-संसार है। स्मरणीय है कि हमारे कुछ पुरुष और महिला खिलाड़ियों ने विश्व-कीर्तिमान स्थापित किये हैं।*

१. पहला एशियाड कब और कहाँ हुआ?

२. सन् १९८२ में नई दिल्ली में आयोजित ९वीं एशियन खेलों का मस्कट क्या था?

३. किस ऐथलीट ने नवीं एशियाड के २० कि.मी. वाक में स्वर्ण-पदक जीता? उसका समय मापन क्या था?

४. भारत ने १९०८ से लेकर अब तक ओलम्पिक खेलों में कितनी बार हॉकी चैम्पियनशिप जीती?

५. कौन महिला ऐथलीट ओलम्पिक्स के किसी इवेंट में फाइनल्स तक पहुँची?

६. एशियाई खेलों में पहला स्वर्ण-पदक जीतनेवाली महिला ऐथलीट कौन थी?

७. कुछ खेलों में निम्नलिखित ट्राफी दी गईं। खेलों के नाम बताओ।

(अ) रानी झाँसी ट्राफी (ब) सुब्रोतो कप (स) मुथिया कप

८. भारत के कुछ प्रसिद्ध खिलाड़ी उपनामों से जाने जाते हैं। उन्हें पहचानो।

(अ) फ्लाइंग सिक्ख (ब) लिट्ल मास्टर (स) विज़र्ड

९. इंग्लिश चैनल पार करनेवाला पहला भारतीय कौन था? कब? सन् १९६० में उसने एक और उपाधि जीती? वह क्या थी?

१०. किस भारतीय ने पहली बार बैडमिंटन में वर्ल्ड टाइटिल जीती? कितनी उम्र में उसने राष्ट्रीय जूनियर चैम्पियनशिप जीती?

११. दुनिया का सबसे ऊँचा क्रिकेट पिच भारत में है। कहाँ?

*(उत्तर अगले महीने में)*

## जनवरी २००३ प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. १०,००० मेगा वाट

२. १९८३

३. जर्मनी

४. पृथ्वी

५. राकेश शर्मा - अप्रैल ३, १९८४

कल्पना चावला - अक्तूबर १९, १९९७

६. १९५७

७. १९५३

८. कोलकाता - १९५४ - नया सेक्रेटैरियट (१४ मंजिल)

# विघ्नेश्वर

श्रीकृष्ण को विस्मित देख रुक्मिणी मुस्कुराकर बोली, "जी हाँ, नाथ ! आज मेरे भीतर आनंद हिलोरें ले रहा है ! वह कन्या-मणि आप पर कैसे आस लगाये बैठी है ! मुझे उनके अन्दर ऐसी ममता दिखाई दी, जैसे कि आप को वह सारी निधि को छिपाने के जैसे अपनी मुट्ठी में भरना चाहती है !"

"तो तुमने अपनी बात नहीं बताई?" कृष्ण ने पूछा। "मैं आप के अंदर एक अणु बनकर रहना चाहती हूँ। चाहे आप किसी की मुट्ठी में क्यों न हों !" रुक्मिणी ने कहा।

"रुक्मिणी, तुमने एक महान विचार की कैसी सूक्ष्म व्याख्या की? इसीलिए मैं अपनी इच्छा से तुम्हें उठा लाया हूँ।" श्रीकृष्ण बोले।

"मुझे जो सची बात मालूम हुई, वही मैं बता रही हूँ। सत्यभामा की ममता मेरी भावना से कहीं बड़ी है। उस ममता के भीतर प्रकृति की अनंत शक्ति भरी हुई है। स्वामी, मेरे अंदर भक्ति भावना मात्र है !" रुक्मिणी कहे जा रही थी। उसे रोकते हुए श्रीकृष्ण मुस्कुराकर बोले, "रुक्मिणी, तुम दर्शन की बातें न बोलो !"

थोड़े दिनों के बाद दावानल की तरह यह बात चारों तरफ़ फैल गई कि "श्रीकृष्ण ने श्यमंतक मणि का अपहरण किया है।" यह ख़बर सत्राजित स्वयं सब जगह प्रचार करते मणि के खो जाने के दुख में पागल की तरह भटकने लगा।

कृष्ण ने सोचा कि उन पर जो दोषारोप किया गया है, उसको लेकर चिंता करने से कोई फ़ायदा

नहीं है। वे मन ही मन ध्यान करने लगे, ''हे विघ्नेश्वर ! यह सब आपकी लीला है, आपकी अब जैसी कृपा हो, वही होगा ! तब उस मणि की खोज में जंगल की ओर चल पड़े।

बात यह थी कि सत्राजित ने सत्यभामा का विवाह शतध्वनु नामक राजा के साथ करने का निश्चय किया और अपने छोटे भाई प्रसेनजित को इस संबंध में शतध्वनु के साथ बातचीत करने भेजा। प्रसेनजित श्यमंतक मणि धारण कर जंगल के रास्ते जा रहा था, तब एक सिंह ने उस मणि से आकर्षित होकर प्रसेनजित को मार डाला। ज़ांबवान ने उस सिंह का वध करके वह मणि अपनी पुत्री जांबवती को दे दी।

मणि को धारणकर जानेवाले अपने छोटे भाई प्रसेनजित को न लौटते देख सत्राजित ने प्रचार करना शुरू कर दिया कि उस मणि का अपहरण श्रीकृष्ण ने किया है। इधर शतध्वनु, जरासंध आदि सत्यभामा के साथ विवाह करने को लालायित थे। साथ ही वे लोग श्रीकृष्ण के दुश्मन थे। इसलिए उन लोगों ने सत्राजित के पास ख़बर भेजी कि वे अपने दुश्मन श्रीकृष्ण का संहार करने में सत्राजित की मदद करेंगे।

श्रीकृष्ण ने एक जगह मृत प्रसेनजित और सिंह के साथ जांबवान के पैरों के निशान भी देखे। इसलिए वे सीधे जांबवान की गुफ़ा पहुँचे।

उस गुफ़ा में नवयौवना जांबवती उस मणि को उछालते दिखाई दी। जांबवती बचपन में एक अनाथ राजकुमारी के रूप में जांबवान को जंगल में प्राप्त हो गई थी। जांबवान उसे अपनी पुत्री की तरह लाड़-प्यार से पालता था।

मणि को लेने के लिए श्रीकृष्ण ने जांबवती का हाथ पकड़ा, पर जांबवती अपने हाथ को छुड़ाने की कोशिश किये बिना लज्जित हो तिरछी नज़र से श्रीकृष्ण की ओर देखने लगी। उसी वक़्त जांबवान ने श्रीकृष्ण पर हमला किया। इस पर उन दोनों के बीच बारह दिनों तक लगातार मल्ल-युद्ध हुआ। श्रीकृष्ण ने जांबवान की छाती पर मुट्ठी का प्रहार किया। तब जांबवान ने पहचान लिया कि श्रीराम ने ही श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया है !

जांबवान ने श्रीकृष्ण को प्रणाम करके कहा, ''हे कृष्ण, आपने जांबवती का पाणिग्रहण किया, अब जांबवती आप ही की है।'' इन शब्दों के साथ उसने श्यमंतक मणि तथा जांबवती को भी श्रीकृष्ण के हाथ सौंप दिया।

इसके बाद श्रीकृष्ण जांबवती तथा जांबवान को साथ लेकर द्वारका नगर पहुँचे और श्यमंतकमणि सत्राजित के हाथ सौंप दी। जांबवान ने सारा वृत्तांत सत्राजित को सुनाया। सत्राजित ने पछताते हुए कहा, ''श्रीकृष्ण, कहा जाता है कि अपनी संपत्ति खोनेवाला व्यक्ति पापी होता है, इसलिए आप जो दण्ड देना चाहें मुझे दीजिए। मैं उसे भोगने के लिए तैयार हूँ।''

श्रीकृष्ण ने कहा, ''सत्राजित, तुम्हारा पश्चात्ताप ही तुम्हारे लिए सही दण्ड है!'' इसके बाद सत्राजित ने श्यमंतक मणि तथा सत्यभामा को भी श्रीकृष्ण को सौंपकर स्वीकार करने की प्रार्थना की।

श्रीकृष्ण ने केवल सत्यभामा को ही स्वीकार करके श्यमंतक मणि लौटा दी। इस पर सत्यभामा ने अपने पिता की ओर इस तरह देखा, मानो उसकी दृष्टि यह बता रही हो, ''पिताजी, आप देखते हैं न कि मैं बड़ी हूँ या यह मणि?'' फिर बोली, ''आप ने एक बार विघ्नेश्वर की महिमा को पहचाने बिना अंट-संट कुछ कह दिया। मैं विघ्नेश्वर के आश्रय में विश्वास करती हूँ! अब मेरी कामना की पूर्ति हो गई है।'' इन शब्दों के साथ विघ्नेश्वर का ध्यान करके अपने दोनों हाथ उठाकर उन्हें प्रणाम किया।

उस वक़्त लीला स्वरूप के रूप में विघ्नेश्वर दर्शन देकर बोले, ''भगवान सदा सर्वदा अपने लिए अत्यंत प्रिय सत्य के वशवर्ती हो जाते हैं! सत्य ही उनकी सम्पत्ति है।'' इस अर्थ को ध्वनित करने के अभिप्राय से वे बोले, ''सत्यभामा के साथ विवाह करके श्रीकृष्ण सत्यापति के नाम से प्रसिद्ध होंगे।'' इन शब्दों के साथ विघ्नेश्वर ने सत्या और श्रीकृष्ण पर पुष्पाक्षतों की वर्षा की। सत्राजित ने भक्तिपूर्वक विघ्नेश्वर को प्रणाम करके कहा, ''हे देव, मेरे अपराध को क्षमा कीजिएगा!''

श्रीकृष्ण ने भी विघ्नेश्वर को प्रणाम करके कहा, ''विघ्नेश्वर! यह सब आपकी लीला है! आपकी कृपा से मैंने दोषारोप से मुक्त होकर मणि से भी अमूल्य सत्यभामा मणि को प्राप्त कर लिया है।'' इसके बाद विघ्नेश्वर यह कहते अंतर्धान हो गये, ''जो लोग श्यमंतक मणि की कहानी सुनते हैं, वे दोषारोप से दूर रहते हैं।''

सत्राजित श्रीकृष्ण के चरण धोकर कन्यादान करने के भाग्य पर फूला न समाया। श्रीकृष्ण ने

जांबवती के साथ विवाह किया। जांबवान श्रीकृष्ण से बोले, "हे कृष्ण, जब आप रामावतार में थे, तब मैंने आपके साथ युद्ध करने की अभिलाषा प्रकट की थी। उस वक़्त मैंने कहा था कि आप जैसे दामाद को पानेवाले राजा जनक के प्रति मैं ईर्ष्या करता हूँ। मेरी वे दोनों इच्छाएँ अब पूरी हो गईं। मैं धन्य हो गया हूँ। जीवन से मुक्त हूँ।" यों कहकर तपस्या करके मोक्ष पाने के ख्याल से जांबवान जंगल में चला गया।

थोड़े दिन बाद शतध्वनु ने प्रतिकार की भावना से सत्राजित को मार डाला और श्यमंतक मणि लेकर कृतवर्मा और अक्रूर के साथ भाग गया। श्रीकृष्ण ने सत्यभामा को सांत्वना देकर शतध्वनु को युद्ध में मार डाला। तब अक्रूर और कृतवर्मा मणि को लेकर भाग गये। उन्हें खोजकर श्रीकृष्ण मणि ले आये और सत्यभामा को उसके पिता के स्मृति-चिह्न के रूप में वह मणि दे दी। इसके बाद श्रीकृष्ण ने मित्रविंदा, कालिंदी, भद्रा, नाग्नजिति और लक्षणा के साथ भी विवाह किया। अष्ट पत्नियों के साथ सुख-वैभव भोगते श्रीकृष्ण हर साल बड़ी श्रद्धा और भक्तिपूर्वक विनायक चतुर्थी मनाने लगे।

श्यमंतक मणि के प्रभाव से सत्यभामा का अंतःपुर अपार सोना से भर गया। उस सोने से सत्यभामा ने रत्न, अमूल्य आभूषण, रेशमी वस्त्र वगैरह ख़रीदे। श्रीकृष्ण की अष्ट महिषियों में वही एक ऐश्वर्यशालिनी थी। इस कारण धीरे-धीरे सत्यभामा के अंदर इस बात का अहंकार बढ़ता गया कि इस अपार संपत्ति के साथ वही श्रीकृष्ण की अत्यंत प्रिय पत्नी भी है।

श्रीकृष्ण की पत्नियों में जांबवती वीणा वादन में बड़ी प्रवीणा थी। नारद मुनि गगन मार्ग से अपनी वीणा का वादन करते जा रहे थे, तब उन्हें एक परिहासपूर्ण अट्टहास सुनाई दिया।

नारद चकित होकर चारों ओर दृष्टि दौड़ाते हुए बोले, "हँसनेवाले कौन हैं?"

"हे नारद ! आपको भी अभी बहुत कुछ सीखना है। आप अपने वीणा वादन पर फूला नहीं समा रहे हैं। इसीलिए हँसी आ गई।" यों आकाशवाणी सुनाई दी।

नारद सोचने लगे, "मुझे यह विद्या किसके पास सीखनी होगी?" तभी विघ्नेश्वर ने दर्शन देकर कहा, "जांबवती के यहाँ वीणा वादन की खूबियों को सीख लो।" इस पर नारद ने कृष्ण

के अनुग्रह के द्वारा जांबवती से वीणा-वादन के सारे रहस्य जान लिये।

एक दिन श्रीकृष्ण रुक्मिणी के अंतःपुर में थे; तब नारद ने प्रवेश करके पारिजात पुष्प उन्हें भेंट किया। कृष्ण ने उसे रुक्मिणी के हाथ में दे दिया। यह बात मालूम होने पर सत्यभामा रूठ गई। श्रीकृष्ण सत्यभामा को मना कर उसे गरुड़ वाहन पर साथ ले इंद्र के स्वर्ग में पहुँचे और उन्होंने नंदनवन से पारिजात वृक्ष को उखाड़ लाकर सत्यभामा के आंगन में रोप दिया। फिर भी सत्यभामा के मन में यह संदेह बना रहा कि कृष्ण का प्रेम उसके प्रति घट गया है! उसके मन में यह इच्छा बढ़ती गई कि कृष्ण को अपने हाथ का खिलौना बनाकर अपने अंतःपुर में ही रखे रहना चाहिए!

एक दिन नारद ने सत्यभामा के महल में प्रवेश करके बताया कि यदि वह पुण्यक व्रत का आचरण करे तो श्रीकृष्ण उसके वश में हो जायेंगे। उस व्रत के नियमानुसार सत्यभामा ने श्रीकृष्ण को नारद के हाथ दान कर दिया। इस पर नारद ने कहा कि श्रीकृष्ण के वजन के बराबर सोना देकर कोई भी उन्हें खरीद सकता है।

सत्यभामा ने अपना सारा सोना तुला में रखा। आख़िर श्यमंतक मणि भी डाल दी, लेकिन श्रीकृष्ण का पलड़ा भारी रहा। इस पर सत्यभामा ने अपने अहंकार को त्याग कर रुक्मिणी से प्रार्थना की कि श्रीकृष्ण को छुड़ाने का कोई उपाय बतला दे।

रुक्मिणी ने समझाया, "बहन, श्रीकृष्ण के बराबर तुलनेवाली संपदा केवल भक्ति है।
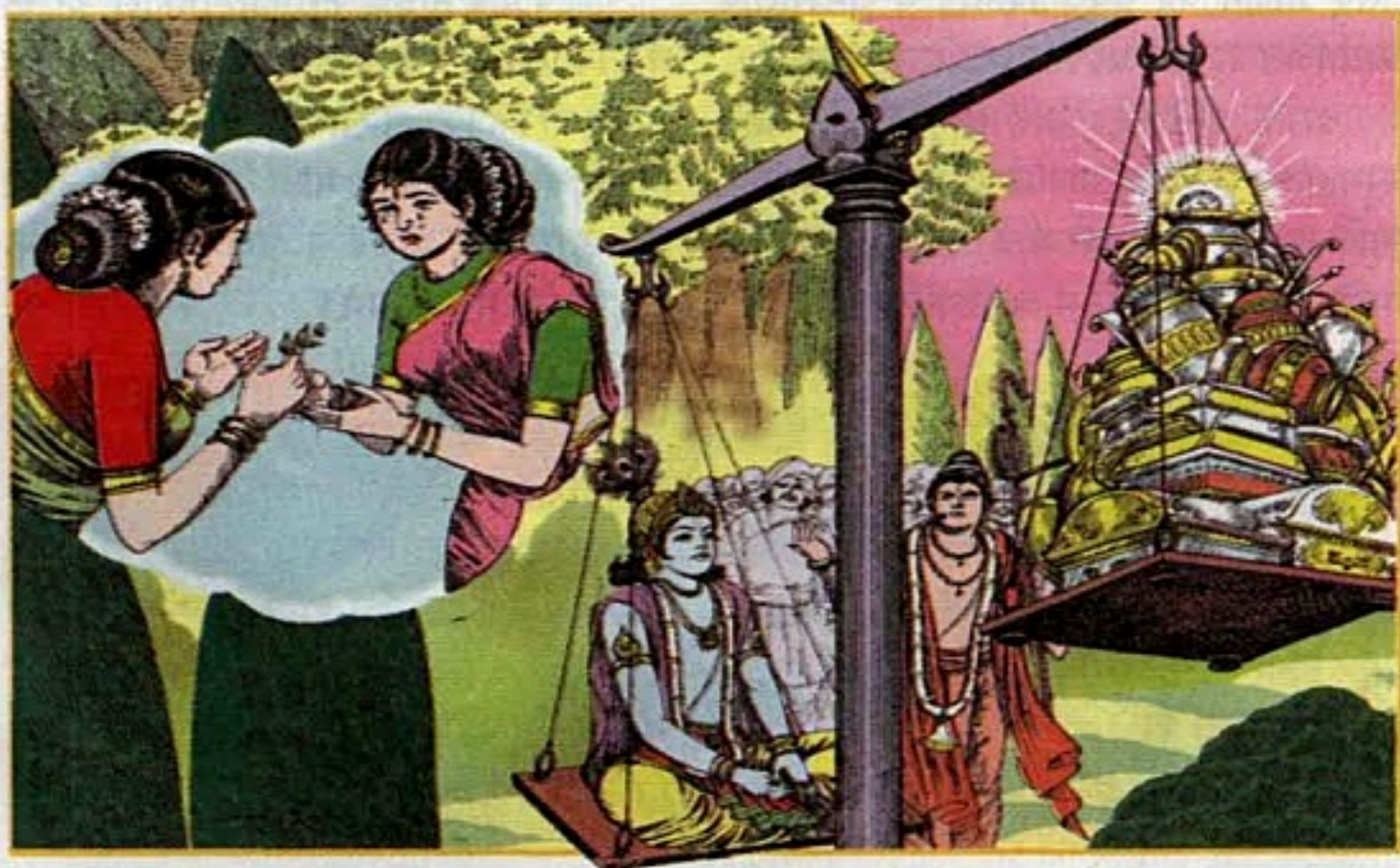
भक्तिपूर्वक समर्पित करने पर उनको तौलने के लिए तुलसी का एक पत्ता पर्याप्त है।" इन शब्दों के साथ रुक्मिणी ने सत्यभामा के हाथ तुलसी का एक पत्ता दे दिया। सत्यभामा ने उस पत्ते को अपनी आँखों से लगाकर भक्तिपूर्वक तराजू में डाल दिया। तब कृष्ण का पलड़ा ऊपर उठ गया। नारद तुलसी दल को लेकर चले गये।

इस घटना से सत्यभामा में ज्ञानोदय हुआ। ऐश्वर्य और मणि के प्रति उसके मन का मोह जाता रहा। श्रीकृष्ण को ही अपना सर्वस्व मानने की भक्ति भावना उसके मन में पैदा हुई। मणि के द्वारा प्राप्त सोना सत्यभामा ने श्रीकृष्ण की सलाह पर यात्रियों में बाँट दिया। अपने पिता की याद में कई धर्मशालाएँ खोलकर यात्रियों के लिए भोजन का प्रबंध किया। वे धर्मशालाएँ सत्राजित के नाम पर सत्र या सराय कहलाईं।

इसके थोड़े दिन बाद श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा का विवाह हुआ। सत्यभामा ने श्यमंतक मणि सुभद्रा को उपहार में दे दी। इस प्रकार वह मणि पांडवों के हाथों में चली गयी।

मणि के द्वारा जो सोना प्राप्त हुआ, वह युधिष्ठिर के लिए राजसूय याग संपन्न करने में सहायक सिद्ध हुआ। इसके बाद युधिष्ठिर जुआ खेलकर अपने साथ अपने भाइयों, द्रौपदी तथा राज्य को भी हार गये। राजसूय याग को देखने पर दुर्योधन के मन में युधिष्ठिर के प्रति ईर्ष्या की अग्नि भड़क उठी। द्रौपदी का पराभव करने का कुविचार उसके मन में पैदा हुआ। पांडवों के पुरोहित धौम्य ने अर्जुन को सलाह दी कि श्यमंतक मणि प्रारंभ से ही पांडवों की यातनाओं का कारणभूत बना हुआ है, इसलिए उसे त्याग दे। इस पर अर्जुन ने उस मणि को अपने धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाकर पृथ्वी पर छोड़ दिया। वह मणि पृथ्वी के गर्भ में चली गयी।

पांडव जुए में हार कर जब वनवास कर रहे थे, तब एक दिन नारद उनके पास पहुँचे। उन्हें सलाह दी कि फिर से खोये हुए राज्य को पाने के लिए वे बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ विघ्नेश्वर की आराधना करें। वे गणेश व्रत करके अज्ञातवास में चले गये।

# शशांक का कौशल

महाराज चित्रसेन चित्रदुर्ग का शासक था। वह प्रजा की देखभाल अपनी संतान की तरह करता था। वह एक आदर्श राजा था। भारी सशस्त्र सेना तथा सेनाधिपति मार्तण्ड की रणनीति के कारण शत्रुओं का भी भय नहीं रहा। उसका मंत्री चंद्रहास मेधासंपन्न था। उसकी समयोचित सलाहों का वह पालन करता था, इसलिए अड़ोस-पड़ोस के राज्यों से मैत्री-संबंध सुस्थिर रूप से स्थापित हो गये थे।

महाराज चित्रसेन को आखेट का बड़ा शौक था। जब भी उसे फुरसत मिलती थी, वह जंगल चला जाता था। लोग उसके इस गुण की प्रशंसा करते थकते नहीं थे।

थोड़े समय के बाद महाराज ने निश्चय किया कि अपने पुत्र युवराज कनकसेन को शासन-भार सौंप दूँ। शुभ मुहूर्त पर उसका राज्याभिषेक भी कर दिया गया।

चित्रदुर्ग राज्य सभी दृष्टियों से संपन्न राज्य था, इसलिए बिना किसी कमी के लोग अपना जीवन सुख-शांति से बिता रहे थे। थोड़े ही समय में कनकसेन ने साबित कर दिया कि वह पिता का योग्य पुत्र है।

चूँकि प्रजा सुखी थी, राज्य संपन्न था, शत्रुओं का भय नहीं था इसलिए अब कनकसेन की दृष्टि कला और साहित्य पर गयी। वह विशेषतया चित्रलेखन में अभिरुचि रखता था। राजभवन के शारदा कलानिलय में मनोहर व अद्भुत चित्र थे, जिन्हें वह बचपन से ही देखता आ रहा था। इस कलानिलय में चित्रदुर्ग की छः पीढ़ियों के शासकों के चित्र भी मौजूद थे। कनकसेन का पिता

- अशोक -

चित्रसेन सातवीं पीढ़ी का था। कनकसेन के मन में इच्छा जगी कि अपने पिता का चित्र भी दादा, परदादाओं के चित्रों के साथ-साथ सजाऊँ।

उसने आस्थान के चित्रकारों से अपने पिता का भी चित्र बनाने की अभ्यर्थना की। कनकसेन ने घोषणा भी की कि जो चित्रकार उसके पिता का बढ़िया चित्र बनायेगा, उसे बढ़िया इनाम भी दिया जायेगा।

इस घोषणा को सुनकर राजधानी के सुप्रसिद्ध चित्रकारों ने महाराज चित्रसेन के चित्र बनाये और राजा कनकसेन को दिखाने ले आये। परंतु उनमें से एक भी कनकसेन को अच्छा नहीं लगा।

क्योंकि महाराज की दायीं आँख ऐंची थी, चित्रकारों ने वैसे ही उसका चित्रीकरण किया। इसलिए कनकसेन ने कहा, "प्रधान ज्ञानेंद्रिय नेत्र में दोष है। महाराज को विकलांग के रूप में भविष्य की पीढ़ियों को दिखाना समुचित नहीं। ऐसे चित्र को हम कलानिलय में सजा नहीं सकते।"

बिना ऐंची आँख के जिन चित्रों का चित्रांकन हुआ, उन्हें देखकर कनकसेन ने कहा, "ये महाराज के हमशक्ल नहीं लगते।"

एक भी चित्रकार ऐसा चित्रांकन नहीं कर पाया, जो कनकसेन को अच्छा लगे।

उस दौरान शशांक नामक एक युवा चित्रकार जीविका की खोज में राजधानी आया। उसने भी राजा की घोषणा सुनी थी। वह राजा से मिला और बोला कि महाराज चित्रसेन का बढ़िया चित्र बनाने का सामर्थ्य उसमें है।

राजा ने चकित होकर कहा, "जब दिग्गज चित्रकारों ने अपनी हार मान ली, तब भला तुमसे क्या हो सकता है? मैं भी चित्र देख-देखकर ऊब गया हूँ। तुम अगर सही चित्र नहीं बना पाये तो तुम्हें सज़ा होगी। खूब सोच लो और किसी निर्णय पर आओ।"

"महाराज, मेरी एक विनती है," शशांक ने कहा। राजा ने संदेह-भरे स्वर में पूछा, "कहो, क्या कहना चाहते हो?"

"दो दिन लगातार मुझे राजा के साथ-साथ रहना होगा। इसके लिए आपको उनसे अनुमति दिलानी होगी।" शशांक ने कहा।

"ठीक है, कल आना।" कनकसेन ने कहा।

दूसरे दिन शशांक राजभवन गया। राजा की

चहल-पहल व हाव-भावों को उसने नज़दीक से ध्यानपूर्वक देखा।

फिर इसके बाद पंद्रह दिनों तक महाराज के चित्रांकन में शशांक लगा रहा। वह दरबार में आसीन कनकसेन के पास उसे ले आया और दिखाया। उसे देखते ही कनकसेन बेहद खुश हुआ। मुस्कुराते हुए उसने वह चित्र सभी सभासदों को दिखाया।

उसे देखते ही सभासद खुशी से पागल हो उठे और तालियाँ बजाने लगे।

तब शशांक ने सबको प्रणाम करते हुए कहा, ''जैसे ही महाराज चित्रसेन का नाम लिया जाता है, लोग उस धर्मप्रभु की ही याद करते हैं, जिन्होंने अपनी प्रजा की देखभाल अपनी संतान की तरह की। उनकी जयजयकार करने से वे थकते नहीं। आप सबको विदित है कि आखेट उनका छठवाँ प्राण है। आखेट में मग्न शूर वीर महाराज में ढूँढ़-ढूँढ़कर देखने पर भी हमें छोटी-सी भी त्रुटि दिखायी नहीं पड़ती।''

सभासदों ने एक बार और हर्षध्वनि की।

उस चित्र का चित्रण इस प्रकार था : महाराज चित्रसेन धनुष पर डोरी चढ़ाकर थोड़ी ही दूर पर खडे बाघ को अपने बाण का निशाना बना रहे थे। उस समय उन्होंने अपनी दायीं आँख बंद कर ली थी, इसलिए उनकी ऐंची आँख बिलकुल दिखायी नहीं दे रही थी।

तब आस्थान का प्रधान चित्रकार अपने आसन से उठा और शशांक को गले लगाकर बोला, ''चित्रकार में जो सामर्थ्य, समय की सूझ और जो विज्ञता होनी चाहिए, वे सब तुममें हैं। तुममें एक महान कलाकार की ऊँची कल्पना की उड़ान के साथ-साथ उसकी गहरी और सूक्ष्म दृष्टि भी है। कमी को भी सुंदर रूप में दिखलाने की क्षमता तुम्हारी विशिष्टता है। तुम आस्थान के चित्रकार बनने के सर्वथा योग्य हो।''

राजा ने शशांक को बहुमूल्य उपहार दिये और उसका सत्कार किया। इसके बाद कनकसेन ने शारदा कलानिलय में अपने वंशजों के चित्रों के साथ शशांक का चित्रित चित्र भी सजाया।

# साहुकार का उपाय

कंटक बहुत बड़ा लुटेरा था। यमुनापुरी की प्रजा को लूट-लूटकर उसने उनकी बड़ी दुर्गति कर दी थी। वे उसका नाम सुनने मात्र से थरथर काँप उठते थे। वह बड़ी चालाकी से सैनिकों की आँखों में धूल झोंक देता और अपना काम कर जाता था। इस स्थिति को देखते हुए राजा ने घोषणा की कि जो कंटक को पकड़ेगा, उसे लाख अशर्फ़ियों का इनाम दिया जायेगा।

विश्वदत्त यमुनापुरी का प्रमुख व्यापारी था। वह किसी को धोखा नहीं देता था और सबके साथ न्यायोचित व्यवहार करता था। लोग उसके सदाचार की प्रशंसा करते हुए थकते नहीं थे।

एक दिन सूर्यास्त के समय एक साधु उसके घर आया। उसने विश्वदत्त से कहा कि मैं काशी से रामेश्वरम जा रहा हूँ। विश्वदत्त ने साधु से विनती कि वे उस रात उसका आतिथ्य स्वीकार करें। साधु ने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

आधी रात को कुछ आवाज़ हुई उससे विश्वदत्त की नींद में खलल पड़ी। उसने खिड़की से झांककर देखा कि साधु अपने गेरुवे वस्त्र निकालकर उस अलमारी को खोलने में लगा है जिसमें नक़द रुपये और गहने हैं। उसे यह जानने में देर नहीं लगी कि वह साधु नहीं, बल्कि चोर है। उसने उसे पहचान भी लिया कि यह कोई और नहीं, लुटेरा कंटक ही है। यमुनापुरी में जगह-जगह पर उसके चित्र टंगे हुए थे, जिनके नीचे राजा की घोषणा भी लिखी हुई थी।

विश्वदत्त डर गया। अब तक उसने किसी चोर को देखा नहीं था। उसपर यह चोर जो कोई साधारण नहीं था! जिसने अब तक कितने ही लोगों को लूटा और हत्याएँ भी की थीं। विश्वदत्त सोच में पड़ गया कि इस बला को कैसे टालूँ? उसने सोचा कि बुद्धि से ही यह काम हो सकता है।

- रमेश पंत -

थोड़ी ही दूरी पर उसकी पत्नी एक अलग खाट पर सो रही थी। उसने थोड़ी देर तक सोने का बहाना किया और फिर ऊँचे स्वर में कहने लगा, "लगता है, घोड़े बेचकर सो रही हो! उठो, मेरी बातें ध्यान से सुनो।" विश्वदत्त की पत्नी उठकर बैठ गयी और कहने लगी, "ऐसी क्या ज़रूरी बात है! तुमने तो मेरी नींद खराब कर दी।"

"अभी-अभी हमारे कुलगुरु सच्चिदानंद स्वामी सपने में दिखायी पड़े।" विश्वदत्त ने कहा।

"स्वामी जी के दिखने के पीछे अवश्य ही कोई सबल कारण होगा। जल्दी बताओ तो सही, उन्होंने क्या आदेश दिया?" उत्सुकता-भरे स्वर में पत्नी ने पूछा।

"तो ध्यान से सुनो। लंबे अर्से से हम अपनी बेटी के लिए वर ढूँढ़ते आ रहे हैं। परंतु सफल नहीं हुए। स्वामीजी ने कहा कि परसों शुक्रवार के दिन सवेरे गाँव के बाहर चले जाना। वहाँ देवी दुर्गा के मंदिर के सामने बरगद के पेड़ के नीचे ध्यान में मग्न एक भक्त मिलेगा। उसी से अपनी पुत्री का विवाह रचाना। सब प्रकार से वह सर्वथा योग्य वर है। उससे विवाह होने पर तुम्हारी पुत्री का जन्म धन्य हो जायेगा।" विश्वदत्त ने कहा।

"बहुत अच्छी बात कही आपने। सब उस स्वामी की कृपा है। ऐसा ही करेंगे।" पत्नी ने खुश होते हुए कहा।

कंटक ने पति-पत्नी का यह संवाद सुन लिया। वह बेहद खुश हुआ। उसने सुन रखा था कि विश्वदत्त की संपत्ति अपार है और साधु-संन्यासियों के प्रति उसमें असीम श्रद्धा-भक्ति
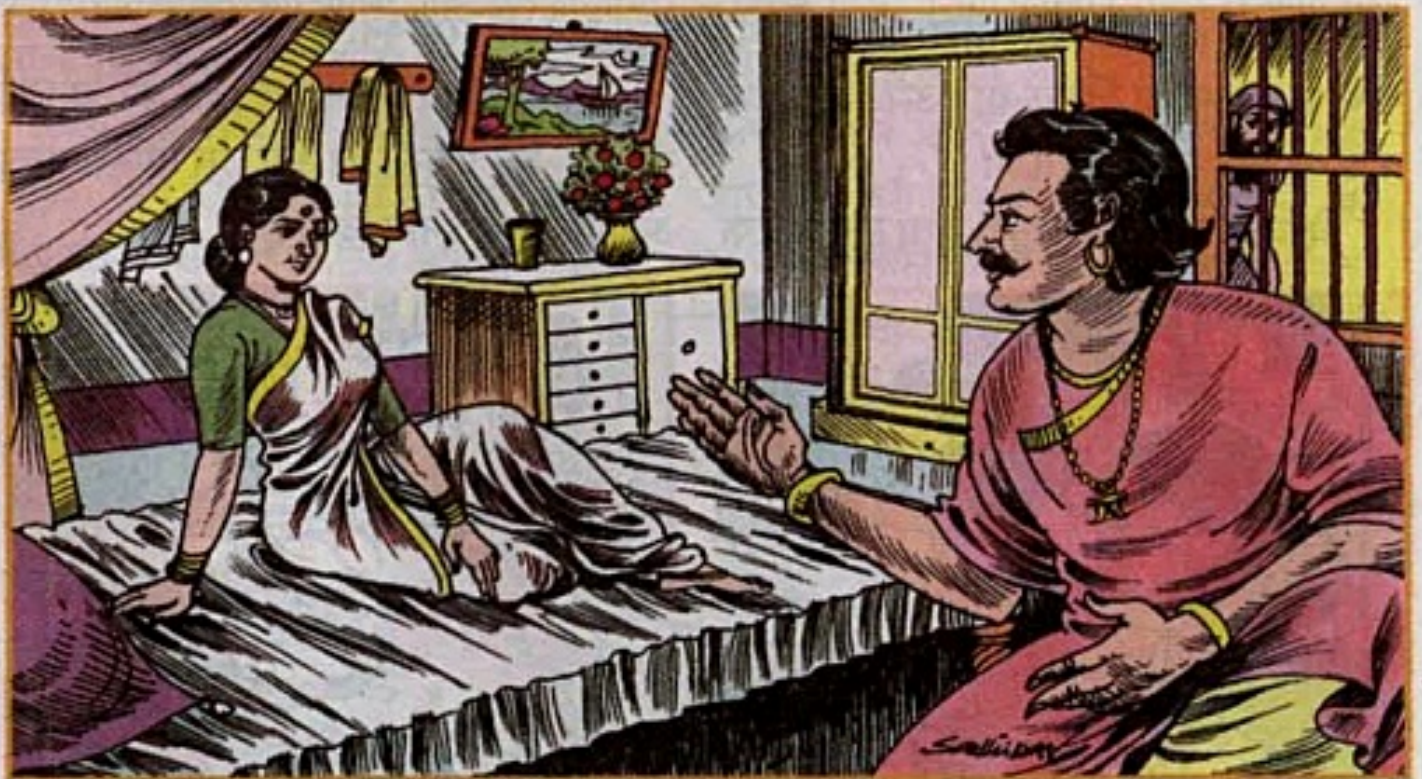
है। इसी वजह से वह साधु बनकर उसका घर लूटने आया था।

कंटक ने फिर से गेरुवे वस्त्र पहन लिये। उसने सोचा कि अभी तो वह नक़द व गहनों की ही चोरी कर सकता है। परंतु अगर देवी दुर्गा के मंदिर के सामने भक्त बनकर बैठा रहेगा तो विश्वदत्त की पूरी संपत्ति उसकी हो जायेगी, साथ ही उसकी पुत्री भी उसकी हो जायेगी।

कंटक ने यों सोचकर नक़द और गहने अलमारी में यथावत् रख दिये और चुपचाप वहाँ से चला गया। विश्वदत को पूरा विश्वास था कि अवश्य ही उसका उपाय फलीभूत होगा। वह उसी रात को कोतवाल से मिला और पूरी बात बतायी। फिर शुक्रवार को प्रातःकाल ही पत्नी समेत देवी दुर्गा का मंदिर गया। वहाँ जाने पर उसने देखा कि ध्यान-मग्न होकर कंटक वहाँ बैठा हुआ है। उसने सफ़ेद वस्त्र पहन रखे थे, माथे पर कुंकुम का तिलक था। उस वेष में उसे कोई पहचान नहीं सकता था।

विश्वदत्त मन ही मन खुश होता हुआ कंटक के पास आकर बोला, ''बेटे, तुम कौन हो? किस गाँव के हो? तुम्हारी भक्ति देखते हुए लगता है कि तुम कोई साधारण मनुष्य नहीं हो।''

कंटक ने दोनों हाथ जोड़कर देवी दुर्गा को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हुए कहा, ''मैं पास ही के गाँव का हूँ। जन्म से ही मैं देवी की आराधना करता आ रहा हूँ। मेरी एकमात्र आकांक्षा है कि इसी बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर ध्यान-मग्न रहूँ और देवी की कृपा पाऊँ।''

कंटक का कंठस्वर सुनने के बाद विश्वदत्त को अब पक्का विश्वास हो गया कि जो साधु बनकर उसके घर आया था, वह यही है। फिर उसने संकेत के द्वारा इसकी सूचना दूर छिपे कोतवाल को दी। बस, कोतवाल सैनिकों को लेकर वहाँ आ धमका और कंटक को क़ैद कर लिया। कंटक को रत्ती भर भी शंका नहीं थी कि ऐसा होने की संभावना है।

उस देश के राजा ने विश्वदत्त की चतुराई की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसे घोषित लाख अशर्फियों का इनाम दिया।

# धर्म-युद्ध

अलकापुर के राजा का नाम विक्रमदेव था। उनके एक वीर सेनापति था। उसका नाम नीलकण्ठ था। एक विजय-दशमी को राजा अपने मंत्रियों और सेनापतियों के साथ बाग में बैठकर बातें कर रहा था। रात का समय था और चारों ओर चाँदनी छिटक रही थी। उसी समय एक घुड़सवार अजनबी वहाँ आया और घोड़े से उतर राजा के सामने जाकर खड़ा हो गया।

इस बेअदब आदमी को देखकर राजा ने क्रोध से पूछा, "तुम कौन हो? यहाँ कैसे चले आए?" "मैं एक वीर योद्धा हूँ।" उस आदमी ने जवाब दिया। "सो तो ठीक है। मगर तुम चाहते क्या हो?" राजा ने पूछा। "योद्धा क्या चाहता है? इसके अलावा कि उसे किसी से लड़ने का मौका मिले! है कोई आपके दरबार में जो मुझसे लड़ने की हिम्मत रखता हो?" वह आदमी बोला। वहाँ जितने लोग जमा थे सब उस आदमी को देखकर डरने लगे। लंबा-तगड़ा, आकर्षक आँखें आदमी। हाथ में चमाचम चमकता हुआ फरसा था। उसे देखकर सब लोगों का मुँह सूख गया।

"हमारा वीर सेनापति नीलकण्ठ तुम से लड़ने को तैयार होगा।" राजा ने हिचकिचाते हुए कहा और इधर नीलकण्ठ उठ खड़ा हुआ। लेकिन उस योद्धा ने हँसकर कहा, "मैं यहाँ लड़ने नहीं आया हूँ। देख लिया न यह फरसा? तुममें से कोई भी बस, इसका एक वार अपनी गर्दन पर झेल ले। इसके बदले में अगले साल इसी दिन वह मेरे यहाँ आए और इसी फरसे से मेरी गर्दन पर एक वार कर ले।" उसकी यह शर्त सुनकर सब लोग सोच में पड़ गए। उस तेज़ फरसे का एक वार गर्दन पर झेल कर जिन्दा रहना वाकई नामुमकिन था। अगले साल बदला चुकाने की बात भगवान जाने!

सब लोग सन्न खड़े देख रहे थे और वह अजनबी इंतज़ार कर रहा था! आखिर नीलकण्ठ ने उसके हाथ में से फरसा ले लिया और पूरा जोर लगाकर उसकी गर्दन पर एक वार कर दिया।

पच्चीस साल पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

विचित्र घटना भूली नहीं थी। उसे वादे के मुताबिक वन-दुर्ग जाना ही था। नहीं तो सारे राज्य पर कलंक लग जाता। आखिर सबसे बिदा लेकर नीलकण्ठ वन-दुर्ग को रवाना हुआ।

किसी को उसके जीवित लौटने की आशा न थी। लेकिन नीलकण्ठ को कोई सोच न था।

जंगलों में से होकर बहुत दूर जाने के बाद वह एक जगह घोड़े से उतरा और एक पेड़ के नीचे लेट गया। इतने में उसे कहीं से एक औरत के रोने की आवाज़ सुनाई दी। दौड़ा-दौड़ा उस तरफ़ गया तो देखा कि कुछ लुटेरे एक राजकुमारी के गहने छीन रहे हैं। नंगी तलवार हाथ में लिए नीलकण्ठ को देखते ही लुटेरे भाग गए।

नीलकण्ठ ने उस राजकुमारी को तसल्ली दी और पूछा कि बात क्या हुई? राजकुमारी ने अपना सारा हाल सुनाकर कहा, ''आज आपने मेरी जान बचाई। मैं आपका एहसान कभी नहीं भूल सकती। लीजिए यह अंगूठी। इसे अपने पास रख लीजिए। इसके प्रभाव से किसी तरह के हथियार आपको चोट नहीं पुहँचा सकेंगे।'' मगर नीलकण्ठ ने अंगूठी लेने से इनकार कर दिया। वह बोला, ''वीर का तो धर्म है कि जिस तरह हँसते वह वार करे, उसी तरह हँसते हुए उसे झेल भी ले। जो हमेशा वार करना ही चाहता है और दुश्मन का वार झेलना नहीं चाहता, वह वीर नहीं। मैं कायर नहीं हूँ। मैं हमेशा धर्म-युद्ध करता हूँ।''

इतना कहकर राजकुमारी से बिदा लेकर वह नज़दीक की नदी में स्नान करने गया। थोड़ी देर

आश्चर्य ! फरसा आधी गर्दन तक धँस गया; मगर लहू की एक भी बूँद न गिरी। वह अजनबी उसी तरह अविचल खड़ा रहा। कुछ क्षण बाद उसने फरसा ऐसे निकाल लिया जैसे कुछ हुआ ही न हो। घाव देखते-देखते भर गया था। वहाँ कोई निशान भी बाकी न रहा।

उसने नीलकण्ठ से हँसकर कहा, ''भैया ! तुम्हारी बारी हो गई। अब मेरी बारी है। हाँ, अगले साल इसी दिन वादे के अनुसार वन-दुर्ग को आना। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा !'' इतना कहकर वह जैसे आया था वैसे ही चला गया। सब लोग मुँह बाए देखते रह गए।

एक साल यों ही बीत गया। देखते-देखते विजय-दशमी निकट आ गई। बेचारे नीलकण्ठ को पिछले साल की विजय-दशमी के दिन की

बाद राजकुमारी भी चुपके से नदी किनारे गई और अंगूठी उसके कपड़ों में छिपाकर वहाँ से लौट गई। नीलकंठ को बिलकुल शक न हुआ।

दूसरे दिन जब नीलकंठ वन-दुर्ग पहुँचा तो वह योद्धा फरसा लिए खड़ा उसका इंतज़ार कर रहा था। "तुम अपनी बात के पक्के हो ! तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई।" वह बोला।

नीलकण्ठ उसका वार झेलने के लिए तैयार खड़ा हो गया। "भई ! मैं तैयार खड़ा हूँ। वार करो।" उसने कहा। "मानों वार खाने के बाद भी तुम जिन्दा रहोगे ! कितने भोले हो !" इतना कहकर उसने अपना फरसा उठाया और पूरे जोर से नीलकण्ठ की गर्दन पर वार किया।

आश्चर्य ! फरसा आधी गर्दन में धँस गया। मगर लहू की एक बूँद भी न गिरी। योद्धा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। नीलकण्ठ को भी कुछ कम आश्चर्य न हुआ। नीलकण्ठ ने फरसा यों निकाला मानों कुछ हुआ ही न हो।

वन-दुर्ग के योद्धा को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। "दगा ! दगा !" कहकर वह फिर फरसा उठाने लगा। तब नीलकण्ठ ने भी तलवार निकाल ली।

इतने में वन-दुर्ग के महाराज और राजकुमारी भी वहाँ पहुँच गए। उनको देखकर दोनों प्रति-द्वन्द्वी लज्जित खड़े रह गए। नीलकण्ठ ने राजकुमारी को पहचान लिया। यह वही राजकुमारी थी जिसे उसने लुटेरों से बचाया था। राजकुमारी ने भी उसे पहचान लिया और बताया कि उसी ने वह जादू की अंगूठी उसके कपड़ों में छिपा दी थी, जिसके प्रभाव से वह उस योद्धा के फरसे का वार खाकर भी जिन्दा रह सका।

तब वन-दुर्ग के महाराज ने नीलकण्ठ की न्यायशीलता और साहस को सराहा। कुछ दिन वहाँ रहने के बाद उसने अपनी लड़की से उसका ब्याह बड़ी धूम-धाम से कर दिया। उस योद्धा ने भी नव-दंपति को आशीर्वाद दिया। आखिर महाराज ने भेद खोल दिया कि उन्होंने ही उस विजय-दशमी के दिन उस योद्धा को इस विचित्र द्वंद्व-युद्ध के लिए अलकापुर भेजा था। इस तरह उसे भेजने का मतलब था राजकुमारी के लिए एक सुयोग्य वर ढूँढना। यह सुनकर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

# विश्व कप की ओर

**जब तक यह अंक तुम तक पहुँचेगा और यदि तुम क्रिकेट के खिलाड़ी या प्रशंसक हो तो तब तक साउथ अफ्रिका में होनेवाले आठवें विश्व कप के पहले मैच में पहले बॉल की बाउलिंग की प्रतीक्षा में तुम दिन गिनते रहोगे।**

पहला विश्व कप १९७५ में हुआ था। पहले और दूसरे विश्व कप (१९७९) के विजेता थे वेस्ट इंडिज जिनका नेतृत्व क्लाइव लॉयड ने किया था। सन् १९८३ में विजेता भारतीय टीम का कप्तान था कपिलदेव। सन् १९८७ में अलन बोर्डर के नेतृत्व में आस्ट्रेलिया ने विजय प्राप्त की, और १९९२ में पाकिस्तान विजेता था जिसका कप्तान था इमरान खाँ। सन् १९९६ में छठा विश्व कप श्रीलंका ने जीता। सन् १९९९ में ७ वें विश्व कप का विजेता आस्ट्रेलिया था।

सन् २००३ के विश्व कप के मैच ९ फरवरी से २३ मार्च तक खेले जायेंगे। यह पत्रिका इनकी प्रगति पर नजर रखेगी और अगले कुछ अंकों में इसके मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालती रहेगी। तब तक क्या तुम यह जानने को उत्सुक नहीं होगे कि कैसे इस खेल का विकास हुआ और एक लोकप्रिय खेल बन गया?

## छिद्र वाले रन

बल्लेबाज से अपेक्षा की जाती थी कि वह दोनों तरफ के दो स्टम्प्स के बीच बने दोनों छिद्रों के मध्य दौड़े। जब फिल्डर, बल्लेबाज के अपने स्थान पर वापस आने से पूर्व दोनों में से किसी छिद्र में गेंद रख देता तो बल्लेबाज 'रन आउट' हो जाता। बहुत दिनों तक गेंदबाजी कमर के बग़ल से (underhand) की जाती थी।

# राखों का ढेर पुनर्जीवित हो उठा

जब आस्ट्रेलिया ने सन् १८८२ में 'ओवल' में इंग्लैण्ड को मात दी, तब दूसरे दिन लन्दन के स्पोर्टिंग्स टाइम्स में 'मृत्यु सूचना' इस प्रकार छपी : "इंग्लिश क्रिकेट की स्नेहमयी स्मृति में, जिसका १८८२ में २९ अगस्त को ओवल में निधन हो गया, दुखी मित्रों एवं संबंधियों द्वारा गहरा शोक व्यक्त किया गया। आर.आई.पी.। टिप्पणी : देह का अंतिम दाह-संस्कार किया जायेगा और राख को आस्ट्रेलिया पहुँचा दिया जायेगा !"

अगले वर्ष इंग्लैण्ड ने आस्ट्रेलिया में टेस्ट शृंखला जीत ली। कुछ स्त्रियों ने अंतिम टेस्ट के बाद एक गुल्ली जला दी और उसकी राख को एक भस्म-कलश में रखकर इंग्लैण्ड के कप्तान आइवो ब्लाई को भेंट स्वरूप दे दी। वह भस्म-कलश मेरिलबोन क्रिकेट क्लब (एम.सी.सी.) को दे दिया गया और अब वह स्थायी रूप से लॉर्ड्स में रखा हुआ है। इसलिए जब भी आस्ट्रेलिया और इंग्लैण्ड मैच खेलते हैं, यह भस्म के लिए संग्राम बन जाता है।

## पसन्द का बल्ला

पाँच फुट ६/७ इं की औसत ऊँचाई के व्यक्ति के लिए २ फुट ११ ई. लम्बा और लगभग २.४ पौण्ड भारी बल्ला आरामदायक और आदर्श माना जाता। पाँच फुट ३" और पाँच फुट ५" के बीच का स्कूल छात्र आसानी से २' ९" लम्बे और २.२ पौण्ड भारी बल्ले से बल्लेबाजी कर सकता है।

## प्रसिद्ध खेल-स्थल

लॉर्ड्स, एम.सी.सी. का घर है, जिसकी स्थापना सन् १७८८ में हुई थी। संस्थापक थे थॉमस लॉर्ड। सन् १८४६ में ओवल, क्रिकेट के मैदान के रूप में खोला गया। मूल रूप से ओवल, सर नोएल कैरन का पार्क था, जो १७वीं शताब्दी में इंग्लैंड में डच राजदूत था।

## केरी पैकर का प्रवेश

सन् १९७७ में आस्ट्रेलिया का शक्तिशाली उद्योगपति केरी पैकर क्रिकेट के मंच पर आया और उसने विश्व के अधिकांश बड़े-बड़े खिलाड़ियों को आस्ट्रेलिया में प्रदर्शन मैचों की शृंखला के लिए अनुबंधित कर लिया जिनमें टेस्ट लाइन्स और सीमित ओवर्स के मैच दोनों शामिल थे।

## स्टिक्स से स्टम्प्स तक

बारहवीं शताब्दी के 'स्टिक्स' का स्थान स्टम्प्स ने ले लिया। प्रारम्भ में २४'' की दूरी पर १२'' ऊँचे (३०.५ से.मी.) दो स्टम्प्स रखे गये जिससे गेंद उसके अन्दर जा सके।

जब ऐसा होता तो बल्लेबाज़ नॉट आउट माना जाता। दो स्टम्प्स के बीच की दूरी बाद में कम कर दी गई। और उनके आड़े-तिरछे एक स्टम्प रख दिया गया।

## दुगुने और तिगुने शतक

एसेक्स के विरुद्ध कैंट की ओर से खेलनेवाले आर्थर एडवर्ड फैग ने सन् १९३८ में पहली पारी में २४४ और दूसरी पारी में २०२ (नॉट आउट) रन बनाये। दोनों पारियों में दुगुना शतक बनानेवाला वह एकमात्र खिलाड़ी है।

ग्राहम अलन गूच (इंग्लैंड) ने सन् १९९० में लॉर्ड्स में भारत के विरुद्ध पहली पारी में ३३१ रन और दूसरी पारी में १२३ रन बनाये। ऐसा किसी और ने नहीं किया।

जनश्रुत खिलाड़ी डॉन ब्रैडमैन को सन् १९२७ और १९४९ के मध्य ३७ दुगुने शतक बनाने का श्रेय प्राप्त है जो अभी तक अविजित रेकॉर्ड है।

## सीमित ओवर्स

इंग्लैंड की एक टीम सन् १९७०-७१ में आस्ट्रेलिया में पर्यटन कर रही थी। चौथा टेस्ट मेलबॉर्न में होनेवाला था। भारी वर्षा के कारण पहले तीन दिनों तक खेल न हो सका। आस्ट्रेलियन क्रिकेट बोर्ड ने तब निश्चय किया कि चौथे दिन दोनों टीमें सीमित (४० ओवर्स ८ बॉल) ओवर का गेम खेलेंगी। इसे देखने के लिए अपार भीड़ उमड़ पड़ी। आस्ट्रेलिया हार गया लेकिन आस्ट्रेलियन क्रिकेट बोर्ड को इस आमूल परिवर्तन के लिए श्रेय दिया जा सकता है। पाँच दिनों के लिए निश्चित किया जानेवाला यह खेल मन्द माना जाता था और इसकी लोकप्रियता घटती जा रही थी। सीमित ओवर गेम की सफलता के कारण इस नई धारणा ने तुरंत जोर पकड़ लिया।

# विश्व कप अब तक

सन् १९७५ और १९७९ के दोनों वर्षों में क्लाइव लॉयोड की वेस्ट इण्डिज टीम ने टूर्नामेण्ट के हर मैच में विजय प्राप्त की। सफलता के इस तूफान को सन् १९८३ में "कपिलदेव के शैतानों" की टीम ने रोक दिया। इस प्रतियोगिता की विशिष्टता ज़िमबाबवे के विरुद्ध एक लीग मैच में स्वयं कप्तान द्वारा दिया गया १७५ रनों का आश्चर्यजनक प्रहार थी। भारत एक चरण पर ५ विकेट्स पर मात्र १७ रन बना पाया था, लेकिन कपिलदेव ने स्थिति को सम्भाल लिया।

सन् १९८७ में, आस्ट्रेलिया ने ८ लीग मैचों में ७ में जीत हासिल की और फाइनल में इंग्लैण्ड के विरुद्ध ७ रन की उत्तेजनापूर्ण विजय प्राप्त की। पाँचवा विश्व कप पाकिस्तान ने जीता जिसने पहले तीन मैच खो दिये थे। तब इसे एक के बाद एक पाँच सफलताएँ मिलीं, जिनमें दो न्यूज़ीलैण्ड के विरुद्ध थीं।

छठा विश्व कप श्रीलंका की झोली में गया। सभी पूर्व विश्व कप के मैचों में विजेताओं ने ही पहले बल्लेबाजी की थी। यद्यपि श्रीलंका ने टॉस जीता था, आश्चर्य की बात है कि उसने आस्ट्रेलिया से पहले बल्लेबाजी करने को कहा। यह भी पहली बार ऐसा हुआ कि मेज़बान देश की टीम ने विश्व कप जीता। भारत और पाकिस्तान श्रीलंका के सह-आतिथेय थे। सन् १९९९ में अंतिम विश्व कप आस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान को १३२ रन में सिमटा कर ८ विकेट्स से जीत लिया। फाइनल लॉर्ड्स में खेला गया था।

क्लाइव लाइड

कपिल देव

एलन बॉर्डर

स्टीव वॉह

अर्जुना रणतुंगा

इमरान खॉन

## मनोरंजन टाइम्स

# बेचारी बछिया

विचारमग्न मौली रास्ता भूल गई है। कुछ दूरी पर उसकी माँ एक खूँटे से बंधी हुई है जहाँ वह नहीं जा पा रही है। क्या तुम मौली को माँ तक सुरक्षित पहुँचने में मदद कर सकते हो? ध्यान रहे कि वह उस गदाधारी दुष्ट आदमी के निकट न जाये जो शायद उसे नुकसान पहुँचा दे।
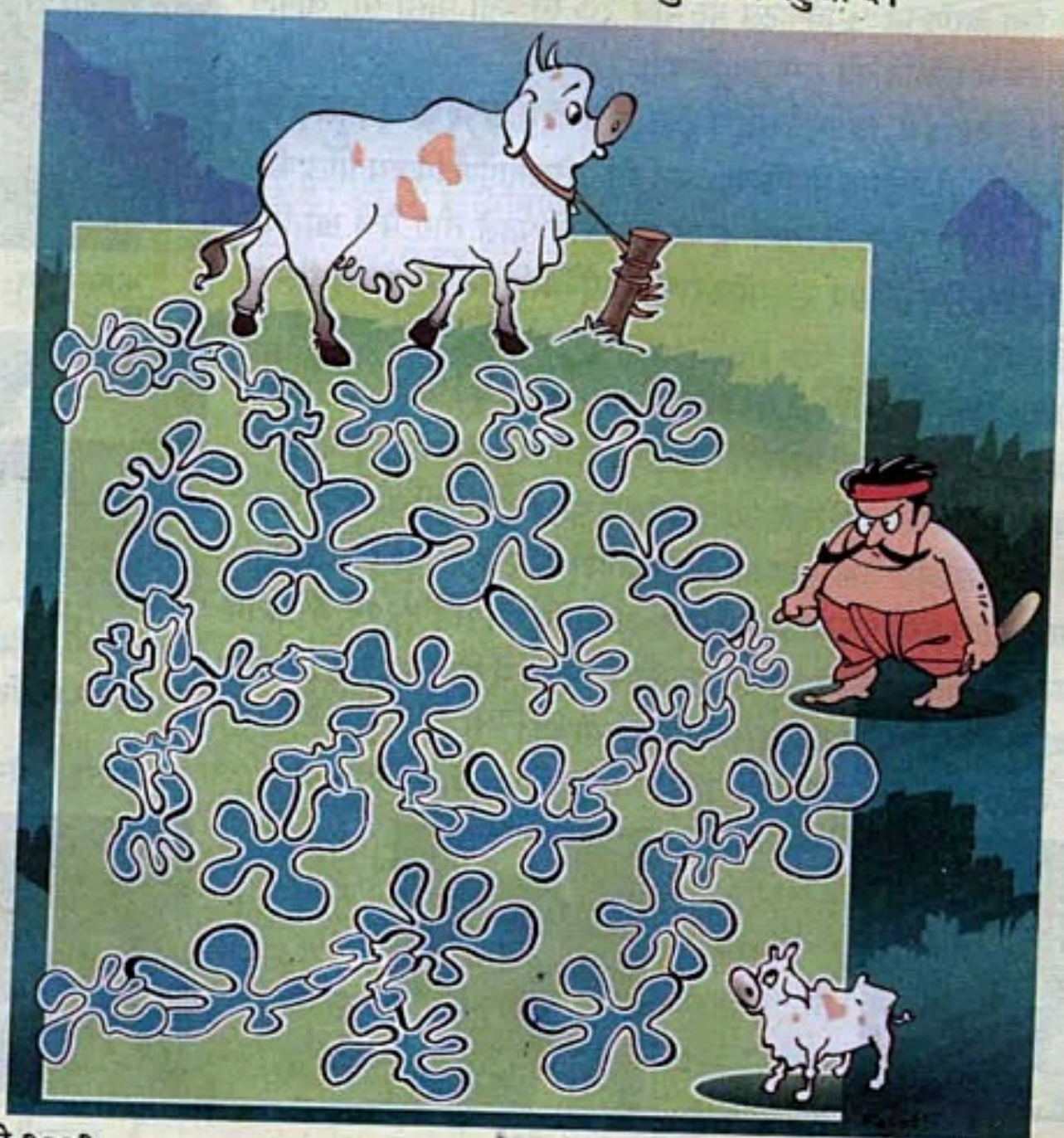
## प्रफुल्ल पिंकू

पिंकू बहुत प्रसन्नचित्त है और अपने छोटे भाई रिंकू के साथ खेल रहा है। क्यों नहीं तुम इसमें कुछ रंग बिखेर कर इस चित्र को चमका दो।

*(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)*

## अप्रकट ऊँट

क्या यह एक लम्बी यात्रा के पश्चात विश्राम करते हुए ऊँट के समान दिखाई पड़ता है? निकट से देखो, और तुम पाओगे कि इसमें बहुत से जानवर छिपे हुए हैं। क्या तुम पता कर सकते हो कि इसमें छिपे हुए कौन हैं?

# चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

**क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?**

*चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,*
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

## बधाइयाँ

दिसम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

**शिव भगत राम**
हरिजन विद्यालय, सदर बाजार,
बैरकपुर, कोलकाता - ७०० १२०.

विजयी प्रविष्टि

गुड़िया के संग गुड़िया प्यारी।
नर कपीश की यारी न्यारी॥

**Answers to Funtimes (page 64)**

विचारमग्न
मौली

अप्रकट
ऊँट

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

SPECIALLY DESIGNED FOR CHILDREN BELOW 9 YEARS

Good news parents and teachers!

We are happy to introduce **JUNIOR CHANDAMAMA,** a new magazine for your tiny tots.

From April 2003 onwards, **JUNIOR CHANDAMAMA** will entertain your tiny tots month after month with many pages of fun and learning.

This magazine will present a package of contests, activities, and puzzles specially designed for children up to the age of 9.

The magazine will endeavour to impart both global and traditional Indian values to children through little stories and activities.

At Rs. 10 per copy, and an annual subscription at Rs. 120, **JUNIOR CHANDAMAMA** promises to be easy on your monthly budgets, too!

As a pre-launch discount offer, an annual subscription of **JUNIOR CHANDAMAMA** will be offered to you at Rs.100/- instead of Rs.120/- for a limited period only.

We hope you will avail this offer.

Those interested can write to us with your name and address for a free sample copy of the introductory issue of **JUNIOR CHANDAMAMA.**